महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५९ **अंक** : १३

दयानन्दाब्द: १९३

विक्रम संवत्: आषाढ़ शुक्ल २०७४

कलि संवत्: ५११८

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११८

सम्पादक

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

परोपकारी का शुल्क

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु.,
त्रिवार्षिक-५८० रु.,
आजीवन (१५ वर्ष)-२००० रु.।
एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डॉलर
द्विवार्षिक-९५ पा./१५२ डॉ.,
त्रिवार्षिक-१४० पा./२२५ डॉ.,
आजीवन (१५वर्ष)-५००पा./८०० डॉ.
एक प्रति - ३ पाउण्ड
एक प्रति - ४ डॉलर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

जुलाई प्रथम २०१७

अनुक्रम

०१. आर्य समाज और दलितोद्धार	सम्पादकीय	०४
०२. संध्योपासना क्यों-४	डॉ. धर्मवीर	०६
०२. यज्ञ ही क्यों-१	डॉ. धर्मवीर	०८
०३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु	१३
०४. हम किसलिये पढ़ते हैं?	पं. उदयवीर शास्त्री	१८
०५. भगवान् बुद्ध और वैदिक धर्म	अविनाशचन्द्र बोस	२२
०६. वेद गोष्ठी-२०१७ के लिए निर्धारित विषय		२४
०७. त्रैतवाद	नवीन मिश्र	२६
०८. जीव अमर है तो हत्या अथवा....	इन्द्रजित् देव	३०
०८. गुरुकुल काँगड़ी	तपेन्द्र वेदालंकार	३३
०८. श्री चाँदकरण जी शारदा ने ऐसी....	ओममुनि	३६
०८. शङ्का - समाधान - ४	डॉ. वेदपाल	३७
०९. संस्था-समाचार		४०
१२. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

सम्पादकीय

आर्य समाज और दलितोद्धार

हमें यह बताते हुए प्रसन्नता है कि **परोपकारिणी सभा** और **पं. लेखराम वैदिक मिशन** के संयुक्त तत्त्वावधान में भरतपुर (राजस्थान) में मार्च तथा जून 2017 में नियमित प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। वाल्मीकि समाज में शिक्षा, कुरीतियों और अंधविश्वासों के प्रति जनजागरण इत्यादि का कार्य श्री रामनिवास गुणग्राहक और श्री लक्ष्मण जी 'जिज्ञासु' तथा पुजारी श्री अरुणानन्द के सहयोग से सम्पन्न हुआ। जहाँ सभा की ओर से मंत्री श्री ओम् मुनि जी तथा श्रीमती ज्योत्स्ना धर्मवीर आर्य के सक्रिय सहयोग से दलितोद्धार का कार्यक्रम उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ वहीं वाल्मीकि समाज ने इस प्रकार के शिविरों के समय-समय पर आयोजन की तीव्र इच्छा भी व्यक्त की। भरतपुर क्षेत्र में सभा और मिशन के द्वारा किया गया यह कार्य स्तुत्य है। वस्तुत: यह आंदोलन एक क्षेत्र विशेष में न होकर सर्वत्र समाज में नुक्कड़ सभाओं द्वारा, छोटी-छोटी कविताओं, गीतों तथा लघु आयोजनों के द्वारा किया जाना अपेक्षित है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में यह प्रयास भी होना चाहिए कि यथार्थ में दलितोद्धार बिना किसी सामाजिक प्रतिक्रिया के विद्वानों के मध्य विवेचित हो जिससे मानव का कल्याण हो सके। यही महर्षि दयानन्द का मंतव्य भी था।

महर्षि ने अपने जीवनकाल में तो अस्पृश्यता के सम्बन्ध में फैली अनेक भ्रान्त धारणाओं पर अपने आचरण से ही प्रहार किया है। उनके प्रयाण के पश्चात् उनके अनुयायियों ने इस दिशा में बृहत् स्तर पर सार्थक प्रयत्न किए। जिस प्रकार विधर्मियों को आर्य-धर्म में दीक्षित करने के लिए शुद्धि को आवश्यक माना गया है उसी प्रकार अपने ही अंग-भूत पददलित समाज को उन्नति के मार्ग पर लाने हेतु आर्य समाज ने 'दलितोद्धार' के नाम से कार्यक्रम संचालित किए तथा इस जड़ पौराणिक-हिन्दू समाज से टक्कर ली। अनेक स्थानों पर तथाकथित शूद्र और अतिशूद्र मानी जाने वाली जातियों को बराबरी के अधिकार दिलाने के कार्यक्रम आर्य समाज ने सफलतापूर्वक संचालित किए - पंजाब में 1888 में ओड, रहतियों तथा मेघों का उद्धार, उत्तराखंड के शिल्पकारों के अधिकारों के लिए संघर्ष इत्यादि ने आर्य समाज को सही अर्थों में इस क्षेत्र में नायकत्व प्रदान किया। स्वामी श्रद्धानन्द महाराज ने 1921 में दिल्ली में 'दलितोद्धार सभा' की स्थापना की और सवर्ण हिन्दुओं से संघर्ष कर उन्हें कुओं से पानी भरने का अधिकार दिलाया। साथ ही उनमें शिक्षा के प्रसार का कार्यक्रम, समाज में बराबरी के लिए सहभोज, उनसे बेगार लेने की प्रथा की समाप्ति इत्यादि कार्यों से आर्यों ने उनमें पर्याप्त जागृति उत्पन्न की। जनवरी 1924 में ही दिल्ली में विशाल 'दलितोद्धार महासम्मेलन' आर्य समाज ने आयोजित किया, जिसमें पंजाब संयुक्त प्रान्त, राजस्थान इत्यादि प्रान्तों से विशाल जनसमूह एवं गण्यमान्य पुरुषों ने भागीदारी की।

महर्षि दयानन्द की और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज संस्था की विशेषता यह है कि हम सामयिक लाभ को ध्यान में न रखते हुए शाश्वत ईश्वरीय नियमों अर्थात् सार्वकालिक न्याय में विश्वास करते हैं। इसी कारण ईश्वरीय ग्रन्थ 'वेद' को प्रमाण मानते हुए तदनुसार आचरण करना हमारे लिए धर्म है। दलित-उद्धार, अछूतोद्धार या उनमें सुधार अर्थात् उन्नति के कार्यक्रम आर्य समाज ने अपने क्षुद्र स्वार्थों के लिए नहीं चलाये प्रत्युत उनका उद्देश्य मानवीय समानता के वेद के उपदेश की क्रियान्विति था। महर्षि प्रत्येक प्रकार की विषमता और अन्याय का विरोध इस कारण करते थे कि वे उसे वेद प्रतिपादित धर्म के विरुद्ध पाते थे। अत: सत्य के प्रहरी होने के नाते मानवीय उत्पीड़न का विरोध भी उनके लिए धर्म ही था।

इन सब कार्यक्रमों को चलाने में आर्य समाज को रूढ़िवादियों की ओर से अनेक कष्ट दिए गए, सामाजिक एवं अन्य प्रकार के प्रतिबन्ध लगाए गए, परन्तु आर्य समाज अडिग रहा और फलस्वरूप आर्य समाज को गर्व है कि उसने दलित एवं पिछड़ी कही जाने वाली जातियों में से अनेक शिक्षाविद्, राजनेता एवं वैदिक विद्वानों को जन्म दिया।

आज यह विषय राजनैतिक हो चुका है, परन्तु यह सामाजिक अधिक है। जब हमारा समाज आध्यात्मिक धरातल पर भी अपने समाज के एक बृहत् वर्ग को अपने

जैसा समझकर व्यवहार करेगा तब शायद यह समस्या स्वत: हल हो सकेगी। जब हम वेद के शब्दों में समझेंगे कि '**अज्येष्ठासो अकनिष्ठासो**' और '**समानो मन्त्र: समिति: समानि**' का क्या अर्थ है तभी समानता वास्तविक अर्थों में आकार ले पाएगी।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में दलितोद्धार का नारा लेकर विभिन्न राजनीतिक दल और समाज उद्धार की संस्थाएँ निरन्तर संलग्न रहीं। अंग्रेजों ने भारत में जाति आधारित राजनीति का जो बीजारोपण किया था उसके फल 1947 के बाद आने लगे थे। दलितों को वोट बैंक की तरह स्वीकार करने वाली सरकारें, पार्टियाँ उनके वास्तविक मसीहा के रूप में अपने को प्रस्तुत करती रहीं और केन्द्र तथा राज्यों में अपनी सरकारें निर्मित करती रहीं। इस क्षेत्र में कई गैर सरकारी संस्थाएँ (N.G.O.) भी सक्रिय रहकर विषमता के बीज बोती रही हैं। समय रहते इन षड़यन्त्रों से सावधान रहने की आवश्यकता है।

ध्यातव्य है कि महर्षि दयानन्द ने 1875 में आर्य समाज की स्थापना कर सामाजिक समरसता का जो ताना-बाना प्रस्तुत किया था उसे 1885 में स्थापित कांग्रेस ने गांधी के नेतृत्व में 1932 में स्वीकार किया। कांग्रेस के उद्देश्यों में समाज उद्धार का विषय नहीं था जबकि अन्य आंदोलन, जिनमें आर्य समाज के अतिरिक्त ज्योतिबा फुले का सत्यशोधक समाज, रानाडे का प्रार्थना समाज, डॉ. अम्बेडकर का बहिष्कृत हितकारिणी सभा इत्यदि के द्वारा दलितोद्धार का कार्य किया जा रहा था। आर्य समाज ने **जाति-पाँति तोड़क मण्डल** के माध्यम से जन्म आधारित जाति व्यवस्था का विरोध किया और बाद में महात्मा गांधी ने हरिजन सभा बनाकर क्रियात्मक दृष्टि से हरिजन उद्धार का महनीय कार्य किया। यद्यपि डॉ. अम्बेडकर जैसे अन्य समाज सुधारक गांधीजी के हरिजनोद्धार से जुड़ नहीं पाये और न ही उन्होंने आर्य समाज के दलितोद्धार के कार्यक्रम को ही हाथ में लिया तथापि अम्बेडकर आर्य समाज के प्रशंसक थे।

भारत में दलित-उद्धार हेतु सन्त नयनार, संत नायनमार, सन्त आलवार, संत तिरूपाणि, नारायण गुरु, बसवेश्वर, संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव, कवयित्री आतुकुरि मोल्ल, महाकवि एजुतवन, नरसी मेहता, रामदेव (रामसा पीर), बलरामदास, चैतन्य महाप्रभु, नमो शूद्र आंदोलन इत्यादि के द्वारा जनजागरण का कार्य उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम भारत में किया गया है, लेकिन समाज को आंदोलित करने का महनीय कार्य महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के द्वारा ही शास्त्रीय आधार पर किया गया। यह समाज में अन्यों के प्रति प्रतिक्रिया-स्वरूप नहीं था जबकि ज्योतिबा फुले तथा दक्षिण के अन्यान्य संतों ने तथाकथित सवर्णों के विरुद्ध प्रतिक्रिया-स्वरूप यह आंदोलन प्रारम्भ किया था; फलस्वरूप सामाजिक समरसता के स्थान पर समाज में परस्पर विद्वेष और राजनीतिक स्वार्थ के लिए निर्मित यह आंदोलन विश्वविद्यालयों में ही नहीं अपितु समाज में सर्वत्र व्याप्त होता रहा।

आर्य समाज द्वारा दलितोद्धार के लिए किए गए कार्यों की डॉ. अम्बेडकर ने प्रशंसा करते हुए लिखा था कि लाला लाजपतराय द्वारा अछूतोद्धार हेतु किए जा रहे कार्य भले ही परिपूर्ण न हों, किन्तु अविश्वसनीय नहीं कहे जा सकते। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा किए गये कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। कांग्रेस ने तत्कालीन स्थितियों में दलितोद्धार के कार्यक्रम पहले हाथ में नहीं लिए लेकिन आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुरूप स्वामी श्रद्धानन्द ने अछूतोद्धार के लिए सर्वप्रथम एक कोष का निर्माण कराया। उन्होंने अछूत जातियों के शैक्षिक उन्नयन हेतु सहभोज, अन्तरजातीय विवाह इत्यादि के द्वारा समाज में कर्म पर आधारित सामाजिक व्यवस्था को समुन्नत करने का स्तुत्य प्रयास किया। उन्होंने 1919 में अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन तथा 1924 की ऑल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में दलितोद्धार को तत्परता से उठाने तथा महत्व देने का कार्य किया। यद्यपि कांग्रेस के मुसलमान नेता इसमें बाधाएँ डालते रहे। बाद में स्वामी श्रद्धानन्द, सरोजिनी नायडू, आई. के. याज्ञिक एवं जी.वी. देशपाण्डे की एक समिति भी कांग्रेस में बनायी गई, लेकिन अन्य कांग्रेसी नेताओं के असहयोग के कारण स्वामी श्रद्धानन्द ने इस समिति से त्याग-पत्र दे दिया था।

यद्यपि आर्य समाज मूर्तिपूजा को नहीं मानता, लेकिन दलितों के मंदिर प्रवेश का उसने हमेशा समर्थन किया और उसके लिए आंदोलन भी किए। गुरुकुलों और डीएवी

शेष भाग पृष्ठ संख्या ७ पर...

संध्योपासना क्यों-४

प्रवचनकर्त्ता - डॉ. धर्मवीर
लेखिका - सुयशा आर्य

यह लेख आचार्य धर्मवीर जी द्वारा बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में दिये गये प्रवचन का संकलन है। ये प्रवचन एक निश्चित विषय पर दिये गये हैं, इसलिये अति उपयोगी हैं। इन प्रवचनों को आचार्य प्रवर की ज्येष्ठ पुत्री सुयशा आर्य द्वारा लेखबद्ध किया गया है। **सम्पादक**

पिछले अंक का शेष भाग....

संध्या करने के दो ही उपाय हैं, आप चलते-फिरते संध्या नहीं कर सकते हो, चलते-फिरते संध्या करोगे तो या तो टकरा जाओगे या ध्यान ही नहीं लगेगा। लेट जाओगे तो सो जाओगे, नींद आ जाएगी। इसलिये वो भी संभव नहीं है। तो **''आसीनः संभवात्''।** जो संध्या है वो बिना आसन लगाए, बिना बैठे संभव नहीं है। क्योंकि उठने में, बैठने में, खड़े होने में, नाचने में, कूदने में, चंचलता रहती है। मन बाहर होता है। इसलिए हम ''अचलत्वम्'' चंचलता रहित होना चाहते हैं। चंचलता रहित कब हो सकते हैं? जब हम स्थिर हों। स्थिर कब हो सकते हैं, जब इतने निश्चिन्त हो जायें कि हमको गिरने का डर न हो, कोई संकट का भय न हो। जगह शान्त, एकान्त, सुन्दर, अच्छी, ठीक और हमको सुलभ हो ऐसी होनी चाहिए। आप क्या कहते हो-अजी मूर्ति सामने होती है ना। इसलिये अब जब आसन लग गया तो मन को सोचने के लिये विषय भी चाहिये तो ध्यान लग जाता है। ये दोनों विरोधी बातें हैं। ध्यान कहते हैं किसी चीज को लगातार सोचना और कुछ भी ध्यान नहीं है। सोचते तो हम सभी सदा ही हैं। लेकिन आप चिन्तन करके देखोगे कि कोई भी व्यक्ति एक मिनट भी एक बात पर नहीं सोचता। अभी कुछ सोचता है थोड़ी देर में फिर कुछ और सोचता है। कुछ देर बाद फिर उसी बात पर आ जाता है, चौथी बार-तीसरी बात पर चला जाता है। ये टुकड़े-टुकड़े करके सोचना जो है, यह चंचलता है। लेकिन जब एक ही बात को, एक ही विषय को आप लगातार सोचते रह सकते हैं, इसको ध्यान कहते हैं।

अब ध्यान क्या हो गया? परमेश्वर के विषय में लगातार सोचना। अब लगातार क्या सोचोगे? कभी सोचकर देखो जब आप अपने बेटे के बारे में सोचते हो। आधा घण्टा, पौना घण्टा, बैठे-बैठे सोचते रहते हो, बेटे से बाहर निकले ही नहीं। अब बताओ बेटे का ध्यान हुआ कि नहीं हुआ। ऐसा नहीं है कि आप ध्यान नहीं कर सकते हो। आपके पति बाहर गए हैं, आप चिन्ता कर रहे हो, वो आएंगे, नहीं आएंगे, क्या हो गया, सूचना नहीं आई। ध्यान हुआ कि नहीं हुआ। ध्यान हम उसका करते हैं जिसमें रुचि होती है, जिसकी इच्छा होती है। इसलिये परमेश्वर को बिना जाने कैसे ध्यान हो जाएगा? हम उसको साक्षात् भले ही न जानते हों, लेकिन परमेश्वर को बौद्धिक रूप से जानना ही पड़ेगा। वो कैसा है? कहाँ है, कितना है? जब हम यह जान जाते हैं, तो हम चिन्तन करते हैं।

संध्या में जितनी बातें आती हैं, जितने मन्त्र आते हैं उनमें यदि आप क्रमशः देखोगे, तो पहली चीज सामान्य आसन, प्राणायाम तक करने के बाद जब हम अघमर्षण के मन्त्र लेते हैं वहाँ हम अपने बारे में विचार करते हैं कि हमारे अन्दर जो भाव हैं वो कितने अनुचित हैं। अनुचित भाव को हम कैसे कम कर सकते हैं? परमेश्वर को अपने साथ मान करके यदि हम कोई बात करते हैं तो अनुचित भाव से हम बच सकते हैं। अगले छः के छः मन्त्र, **जम्भे दध्मः** वाले, परमेश्वर की सर्वव्यापकता के बारे में बोल रहे हैं। अर्थात् आप मन को जिस भी दिशा में दौड़ाओ जिस भी दिशा में ले जाओ, दूर-दूर तक जहाँ भी ले जाओ, वहाँ आप यह अनुभव करो कि यहाँ परमेश्वर की उपस्थिति है। उसकी क्रिया यहाँ दिखाई दे रही है, वो यहाँ पर विद्यमान है। मैं उसकी दृष्टि से, उसकी नजरों से बच नहीं सकता हूँ। जब चारों ओर मैं यही अनुभव करने लगता हूँ कि चन्द्र में उसकी उपस्थिति है, समुद्र में उसकी उपस्थिति है।

पृथ्वी पर उसकी उपस्थिति है, आकाश में उसकी उपस्थिति है। जिधर देखता हूँ, उधर कुछ और दिखाई ही नहीं देता। हमको एक ही वस्तु दिखाई देती है और वो है उसका सामर्थ्य।

इस दृष्टि से जब हम विचार करते हैं, तब हम इस संध्या को पूरा कर पाते हैं। संध्या के अन्त में जो मुख्य बात है वो ध्यान देने की है। गायत्री मन्त्र के बाद हम कहते हैं- **हे ईश्वर! दयानिधे! भवत् कृपयानेनजपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणाम् सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः। हे ईश्वर! दयानिधे**- परमेश्वर कैसा है- दया का निधान है, खजाना है, दया करने वाला है। भवत् कृपया- आपकी कृपा से हमने क्या काम किया है, **अनेन जपोपासनादि कर्मणा**- हमारे संध्या करने से होता क्या है? होता यह है कि **जपोपासनादि कर्मणा।** यह नहीं कहा कि खेती करने से या दुकान करने से या कहीं दौड़ लगाने से तुम्हें यह सिद्धि मिलेगी। वो यह कहता है कि मेरे जप, उपासना आदि काम करने से- **धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः** सद्य मतलब तत्काल जितना जल्दी सम्भव हो अर्थात् मेरे जप, उपासना आदि कार्य मेरे धर्म, अर्थ, काम मोक्ष को देने वाले होने चाहिए अर्थात् मेरी उपासना करने से, मेरे धर्मार्थ कामादि की सिद्धि न हो तो मेरी उपासना क्या हुई? या तो मैं उपासना जानता नहीं या मेरी उपासना अधूरी है और इसलिए जपोपासना आदि का महत्त्व है। यहाँ मैं कोई और काम करके आपकी प्रार्थना-उपासना नहीं कर रहा हूँ। मैं जप आदि संध्या के द्वारा आपकी उपासना कर रहा हूँ। यहाँ जो विशेष शब्द ध्यान देने लायक वो है सद्यः। सद्य का अर्थ है- तत्काल।

संध्या करूँ और लाभ नहीं हो, ऐसा नहीं हो सकता। संध्या अपने आपमें एक ऐश्वर्य है। अर्थात् संध्या करके आदमी खड़ा हो तो उसके मुखमंडल पर जो प्रसन्नता, जो चिन्ता से रहित होना, जो किसी चीज की उपलब्धि होने पर लाभ होने वाली भावना, जो कोई बहुत बड़ी प्राप्ति हो गई हो ऐसा लगना ही तो संध्या के लाभ हैं। इसलिये **सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।** हम सब की वो सिद्धि सद्यः हो जाए। उपासना व्यर्थ नहीं है। वो अनावश्यक नहीं है। वो किसी बात के लिए है, किसी मतलब के लिए है। जब ये बात सिद्ध हो जाती है तो हम आखिरी बात कहते हैं। **नमः शंभवाय च..... शिवतराय च।** परमेश्वर के सारे रूप हैं इसमें। **नमः शिवाय**- वो शिव है, कल्याण करने वाला है, लेकिन **शिवतर** है अर्थात् उससे अधिक कल्याण करने वाला कोई नहीं है। यहाँ शिव ओर शिवतर तरप्-तमप् जो है, आपके superlative degree जैसे काम आती हैं। वो शिव है, शिवतर है। **नमः शिवाय च शिवतराय च।** वो शम् करने वाला है, कल्याण का करने वाला है। वो **मयः**-सुख का करने वाला है। वो हमारा भला करने वाला है। ऐसे उसके लिए हमारा यह **नमः**-नमः का अर्थ है समर्पण। क्योंकि जब हम किसी को मान लेते हैं कि तू ही हमारे समस्त कर्मों की सिद्धि का करने वाला है तो कहते हैं कि देखिये भाई साहब अब हम आपके भरोसे हैं, आप जैसा कहो वैसा ही कर लेंगे। आप जो कहोगे वैसा ही हो जाएगा। वो समर्पण यह हो जाता है कि भई हमने मान लिया है कि जो सामर्थ्य आपके पास है वो हमारे पास नहीं है और आपके मिलने से हमें वो सामर्थ्य मिल जाता है इसीलिए हम आप पर निर्भर करते हैं। यह संध्या का एक मोटा-मोटा रूप है।

पृष्ठ संख्या ५ का शेष भाग... (सम्पादकीय)

संस्थाओं में बिना भेदभाव के सभी को शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराने का महनीय कार्य आर्य समाज द्वारा सम्पन्न करवाया गया जो आज के युग की महती आवश्यकता है।

20वीं शताब्दी को आर्य समाज की शताब्दी कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। दलितोद्धार में अनेक नेताओं को आर्य समाज ने तैयार किया और बहुत से विद्वानों को शिक्षक, धर्मप्रचारक इत्यादि के रूप में प्रस्तुत भी किया जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में मुख्य भूमिका का निर्वाह करते हुए सामाजिक समरसता के इस महनीय यज्ञ को सम्पन्न कराया। स्पष्टतः बौद्धिक ही नहीं रचनात्मक दृष्टि से भी आर्य समाज को दलितोद्धार में क्रियात्मक तथा निर्णायक भूमिका निभानी होगी। सभी को समान रूप से ज्ञान प्राप्त करने हेतु वेद का आदेश है -

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।।

- (यजुर्वेद-26/2)

दिनेश

यज्ञ ही क्यों-१

प्रवचनकर्त्ता - डॉ. धर्मवीर
लेखिका - सुयशा आर्य

यह लेख आचार्य धर्मवीर जी द्वारा बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में दिये गये प्रवचन का संकलन है। ये प्रवचन एक निश्चित विषय पर दिये गये हैं, इसलिये अति उपयोगी हैं। इन प्रवचनों को आचार्य प्रवर की ज्येष्ठ पुत्री सुयशा आर्य द्वारा लेखबद्ध किया गया है। **सम्पादक**

हमारी एक माता जी थीं। जब मैं पढ़ता था, तब उनके पास रहता था। उनके पास एक नौकर था, नौकर बहुत पुराना था तो एक पड़ोसिन ने यह सोचा कि यह नौकर बहुत अच्छा है, ईमानदार है और एक जगह टिका हुआ है, इसे मैं ले लूँ। माता जी कहीं बाहर गईं तब उन्होंने उस नौकर को समझा लिया, मना लिया कि वो उनके यहाँ आ जाये। तुझे पैसे ज्यादा दे देंगे, सुविधा ज्यादा दे देंगे। नौकर सीधा-सादा था इसलिए उनके यहाँ चला गया। तीसरे ही दिन वो लौट आया। क्योंकि वो कहती थी कि मैं तुझे खिला नहीं सकती, तू बहुत खाता है। हमको बहुत खाने वाला जानवर पसन्द नहीं, बहुत खाने वाला मेहमान पसन्द नहीं तो यह खाने वाला भगवान् हमको कैसे पसन्द हो सकता है? इसलिए हमने भगवान् तो ढूँढा और उसको खिलाने का संकल्प भी पूरा किया, लेकिन ऐसा भगवान् ढूँढ के लाए जो खाता ही नहीं। वह बड़ा दयालु है, वो आपका खर्च नहीं चाहता। आपको कोई कमी नहीं देना चाहता, इसलिए आप दो चावल के दाने भी उसके सामने रखते हो तो या तो चिड़िया खाती है या चींटी खाती है, वो बेचारा नहीं खाता। इसलिए हमारे ऋषियों ने कहा कि हम यदि सचमुच देवताओं को भोग लगाना चाहते हैं तो देवताओं के मुख में डालिए और उनका मुख है अग्नि। देवताओं को रोज खिलाना है क्योंकि जो भी खाएगा वो रोज ही जाएगा। ऐसा नहीं है कि एक ही दिन खिलायें। लोग गणेश जी को एक ही दिन दूध पिलाते हैं पूरे साल में। मैंने एक पुजारी जी से पूछा- पुजारी जी! ये बताओ गणेश जी तो सालों से आपके पास थे। क्या गणेश जी ने आपको जगाकर कहा कि आज भूख लग रही है, दूध पिला दे या आपको इल्हाम हो गया कि आज गणेश जी को भूख लगी है और फिर क्या केवल एक ही दिन भूख लगी। एक बार भूख लगनी शुरू हो जाए तो बिना खाये बन्द नहीं होती है, अगर बंद हो गई तो फिर तो दवा देनी पड़ेगी। आप तो एक दिन में थक गए खिला कर। आदमी खिलाकर थक जाता है। वो सोचता है मेहमान आया है तो वो जाएगा भी। मेहमान केवल भोजन ही करता है। थोड़ा-बहुत समय ले लेता है। स्वामी सत्यप्रकाश जी कहा करते थे-मैं जब कहीं जाता हूँ तो पहले ही यजमान को ये बता देता हूँ कि मैं कब जाने वाला हूँ। यजमान सोचता है कि मुसीबत दो या तीन दिन की ही है। उससे दो फायदे होते हैं-एक तो वो निश्चिंत हो जाता है कि यह टिकने वाली मुसीबत नहीं है, जाने वाली है और दूसरा यह होता है कि ज्यादा ठहरने वाले के लिए यजमान कुछ बचाकर रखता है, सोचता है कल क्या खिलाऊँगा? कम ठहरने वाले के लिये दिल खोलकर सेवा-सत्कार कर देता है।

खाने वाला हमको बड़ा परेशान करता है, बहुत दु:खी करता है। हमारी कमाई का हिस्सा उसके पास चले जाने का डर रहता है। शायद यही कारण रहा होगा कि यज्ञ बंद हुए होंगे। लेकिन स्वामी दयानन्द यह कहते हैं कि देखो जो खाता है वो तुम्हारे लिए कुछ काम भी तो करता है। आप किसी को कुछ खिलाते हैं तो वो केवल खाने के लिए आपके यहाँ नहीं आता। खाना उसकी मजबूरी है, इसलिये खाएगा ही। आप कहीं जायेंगे तो आप भी खायेंगे। लेकिन बदले में वो आपका कुछ कल्याण, कुछ लाभ चाहता है, यह उसकी सदिच्छा है। इसलिये यज्ञ में आप कुछ देते हैं तो आप ये क्यों समझते हैं कि यह हमारा गया। खेत में बीज बोकर क्या किसान कभी यह समझता है कि मेरा बीज गया? चला भी जाए तो दोबारा बोता है। बारिश देर से हुई और बोया हुआ बीज सूख गया । दोबारा बारिश होती है तो फिर बोता है, क्योंकि उसे यह पता है कि यह लौटकर आने वाला है। वैसे ही यज्ञ वो पद्धति है, वो आविष्कार है जो हमको ज्यादा करके देता है। जो जाता है वो हमसे घटता नहीं है, बल्कि अधिक होकर प्राप्त होता है। उसकी मात्रा बढ़ती है। हम यज्ञ में जो भी सामग्री

डालते हैं, उससे कई गुना होकर वह हमें प्राप्त होती है। नियम यह है कि स्थूल वस्तु को सूक्ष्म रूप में जब आप ले जायेंगे तो वह व्यापक हो जाएगा और प्रभावकारी हो जाएगा। आज आप यह विज्ञान की बात कहते हैं, लेकिन इसके बारे में आप विस्तार से पढ़ना चाहें तो ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका का जो वेदोक्त धर्म प्रकरण है, उसमें आप इसको देख लो कि हम हवन में डालकर क्यों घी-सामग्री को बर्बाद करते हैं? क्यों फूँकते हैं?

इस कर्म काण्ड के बारे में स्वामीजी ने बड़ी सीधी बात लिखी है कि कोई पदार्थ नष्ट तो हुआ ही नहीं करता, केवल अदृश्य होता है। यही आज का विज्ञान कहता है। जब आपने घी डाला था आपको दिख रहा था और आपने जैसे ही यज्ञ में आहुति दी वो अलग-अलग गैस के रूप में, अलग-अलग पदार्थों के रूप में बँट गया और पहले से और ज्यादा हो गया। हम यज्ञ क्यों करते हैं? हम चाहते तो हैं सबको खिलाना लेकिन हमारे पास उतना होता नहीं जितना होना चाहिए।

हमारे यहाँ एक बड़े यज्ञ-प्रेमी हुआ करते थे जो महर्षि दयानन्द के सामने उनके शिष्य बने, महात्मा कन्हैयालाल जी। वो यज्ञ करने के लिए जब स्कूलों में जाते तो छोटे-छोटे बच्चों से पूछते-भाई, तुम्हारी कक्षा में कितने बच्चे हैं? कोई कहता २५ हैं, ३० हैं, ५० हैं,। स्कूल में कितने हैं, २०० हैं, ४०० हैं। वह बोले, मेरे थैले में कुछ बताशे हैं, वो इतने तो नहीं है कि सबको दे सकूँ तो बताओ कोई उपाय कि ये मैं सबको कैसे दे सकता हूँ? किसी ने कहा पानी में डालो पर पानी में डालकर एक सीमा तक ही आप दे सकते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है क्योंकि यह स्थूल से कुछ सूक्ष्म हुआ। लेकिन कुछ और भी ज्यादा लोगों को हम देना चाहते हैं तो हम कैसे उपयोग करेंगे उसका? तब हम अग्नि में डालेंगे। अग्नि में डालकर उसका कितना प्रभाव हो सकता है, यह कल्पना नहीं की जा सकती। इसीलिये उत्तमोत्तम पदार्थों को खाना तो अच्छी बात है, लेकिन खाने के साथ अग्नि में डालना भी उतनी ही अच्छी बात है। इसलिये हम उत्तम पदार्थों की हवि यज्ञ में देते हैं। क्या लाभ हुआ इससे? इससे दो सबसे बड़े लाभ हुए-एक तो कम वस्तु से अधिक उपयोग हुआ। थोड़ा-सा घी हमने डाला था, थोड़ी सी सामग्री हमने डाली थी तो वातावरण में उससे कई गुना सुगन्ध फैलती है उसका दूसरा सबसे बड़ा लाभ होता है- हमारी पड़ोसी से बोलचाल कम है, तो हम उसे प्रसाद पहुँचायें या न पहुँचायें यह हमारी मर्जी है। वो ले या न ले उसकी मर्जी है। लेकिन वो यज्ञ करे तो हम क्या करेंगे? या हम यज्ञ करें तो वो क्या करेगा? हमारा प्रसाद लेगा क्योंकि इसमें देवत्व की शक्ति आ जाती है, दिव्य शक्ति आ जाती है। दिव्यता क्या है? देवत्व क्या है? स्थूल सीमायें जहाँ टूट जाती हैं, समाप्त हो जाती हैं, वो परिस्थितियाँ दिव्य होती हैं। वो चाहे लोक दिव्य हो, वो बात दिव्य हो, वो कार्य दिव्य हो-देवत्व की सीमा में आ जाता है। इसलिये हमारे ऋषियों ने यज्ञ के रूप में एक ऐसा आविष्कार किया है कि हम इन सामान्य जड़ वस्तुओं से दोहरा लाभ प्राप्त करते हैं। वातावरण की शुद्धि भी करते हैं और अपनी आत्मा को पवित्र भी करते हैं। प्रकृति के तीन गुण हैं-सत्व, रज, तम। यह निश्चित है कि ये प्रकृति में हैं तो शरीर में भी हैं और इस शरीर के कारण से वो आत्मा को भी प्रभावित करते हैं। जब प्रकृति में सतोगुण बढ़ता है तो हमारे शरीर में भी सतो गुण बढ़ता है और रजोगुण होता है तो हमारे शरीर में भी रजोगुण होता है। सतोगुण की सबसे बड़ी पहचान है कि व्यक्ति परोपकार करने की बात केवल और केवल तब सोचता है जब उसके मन में सतोगुण का प्रादुर्भाव होता है। यज्ञ करने की बात मनुष्य केवल तब सोच सकता है जब उसके मन में सतोगुण का प्रादुर्भाव होता है। मनुष्य वेद पढ़ने के बारे में, परमेश्वर का चिंतन करने के बारे में, स्वाध्याय करने के बारे में तभी विचार करता है जब उसके मन में सतोगुण की प्रधानता होती है। इसलिये सतोगुण वो गुण है जिसे सब पसन्द करते हैं, जो सबको पसंद है। जब हम सतोगुण में होते हैं, उस समय हमारा किया हुआ कार्य, हमारा किया हुआ विचार सबके लिए उपयोगी होता है।

स्वामी जी महाराज ने संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण में लिखा है कि दुनिया के जितने भी काम हैं उनको करने से जब हमारा भला होता है तो दूसरे का नुकसान होता है। दूसरे का भला होता है तो हमारा नुकसान होता है। किसी को शेयर मार्केट में लाभ हुआ तो उसको लाभ तब होगा जब दूसरे को शेयर मार्केट में हानि हुई हो। व्यापार में किसी को लाभ हुआ है तो किसी की गाँठ से गया है चाहे कम या ज्यादा। लेकिन स्वामी जी महाराज कहते हैं कि यज्ञ ऐसी प्रक्रिया है जो अपने और पराये दोनों के कल्याण

के लिए किया जाने वाला कार्य है। अर्थात् इसे जो कर रहा है उसका भी भला होता है और जो दूसरे लोग हैं उनका भी भला होता है। हमारे ऋषियों ने उन कार्यों की खोज की है जो हमारे लाभ के साथ दूसरे का भी लाभ है। इसीलिए यज्ञ संसार का सर्वाधिक उपकार करने वाला कार्य है। संसार का कल्याण करने वाला कार्य है और इसलिए प्रत्येक को अनिवार्य रूप से यज्ञ करना चाहिए–ये बात हमारे ऋषि लोग कहते हैं।

आजकल विज्ञान बड़ा विकसित है। एक भले वैज्ञानिक ने मुझे एक चिठ्ठी लिखी, विज्ञान का विद्यार्थी होगा कोई। जैन लड़का था, उसने लिखा कि आजकल सबसे ज्यादा वातावरण का प्रदूषण ये आर्यसमाजी करते हैं क्योंकि वो हवन करते हैं। उससे प्रदूषण होता है। वो लकड़ियाँ जलाते हैं तो धुआँ होता है। सामग्री जलाते हैं तो धुआँ होता है धुएं से Co_2 बनता है और इसलिए वातावरण प्रदूषित होता है। उसने किसी वैज्ञानिक को भी एक पत्र लिखा। वैज्ञानिक ने जवाब में कहा हाँ, लकड़ियाँ जलाने से दुर्गन्ध होती है। उसने वो पत्र मुझे भेज दिया। परोपकारी में साल–दो साल पहले (तत् समयानुसार) इसकी विस्तार से चर्चा हुई है। जैसा मेरा स्वभाव है, मैं जिनको इस विषय का विशेषज्ञ मानता हूँ या जिन्होंने इस पर विचार किया है मैंने वो पत्र उन लोगों को भेज दिया। उनमें महाराष्ट्र के एक सु.ब. काले जी हैं। उन्होंने बहुत ही सुन्दर लेख हमारी परोपकारी पत्रिका में इसके उत्तर में लिखे। सत्यव्रत राजेश गुरुकुल कांगड़ी के हैं, उन्होंने भी बहुत सुन्दर लेख लिखा है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी, तार्किक दृष्टि से भी और परम्परा से भी इस बात को उन्होंने समझाया कि जो चीज काल की कसौटी पर खरी उतरी है, उसको विज्ञान की कसौटी पर नकार नहीं सकते। कहीं समझने में भूल है, उसको ठीक समझिये, केवल समझने की बात है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि लकड़ी जलाते हैं तो धुआँ होता है, धुआँ होता है तो थोड़ा बहुत प्रदूषण भी हो सकता है। इसमें क्या एतराज है। क्योंकि सवाल यह है कि प्रदूषण तो हमारे भोजन बनाने से भी होता है। प्रदूषण तो हमारे कार में चलने से भी होता है, प्रदूषण तो हमारी फैक्ट्री से भी होता है, प्रदूषण तो हमारे घर में झाड़ू लगाने से भी होता है–तो क्या ये काम बन्द किए जा सकते हैं? प्रश्न यह है कि हानि की मात्रा क्या है और लाभ की मात्रा क्या है।

व्यक्ति इसलिये नहीं समझ पाता क्योंकि उसने यज्ञ का कभी अध्ययन ही नहीं किया। यज्ञ में हर कोई भी लकड़ी नहीं डाली जाती। आप कीकर की, बबूल की लकड़ी से हवन नहीं करते हैं, आप नीम की लकड़ी से हवन नहीं करते हैं, आप शीशम की लकड़ी से हवन नहीं करते हैं। जो मजबूत लकड़ियाँ है उनसे हवन नहीं करते हैं। जो दुर्गन्ध वाली लकड़ियाँ है, उनसे हवन नहीं करते हैं। आप उन लकड़ियों से हवन करते हैं जो बहुत कमजोर हैं जिनमें Co_2 पैदा करने की क्षमता ही बहुत कम है। आप पीपल से हवन करते हैं, आप आम से हवन करते हैं आप ऐसी ही दूसरी लकड़ियों से हवन करते हैं। मतलब, हमारे यहाँ वैज्ञानिक स्तर पर जाँच–परखकर उनका निर्धारण किया गया है कि कौनसी चीज यज्ञ में काम में लेनी है और कौन–सी चीज नहीं लेनी। कोई भी लकड़ी हम नहीं डालते यदि डालते हैं तो हमारी मजबूरी है, हमारा अज्ञान है, हमारी गलती है। हम चूल्हे में तो लकड़ी कोई भी जला लेते हैं, लेकिन यज्ञ में हम कोई भी लकड़ी नहीं जलाते। कोई भी सामग्री हम यज्ञ में नहीं डालते। यज्ञ में केवल मीठे की आहुति देते हैं, केवल घी की आहुति देते हैं। हम मिर्च की आहुति तो नहीं देते। हम नमकीन पदार्थों की आहुति तो नहीं देते। अतः यज्ञ बिना सोचे किया गया कार्य नहीं है, बहुत बुद्धिपूर्वक किया गया कार्य है और यदि आपको इस विषय में विस्तार में पढ़ना हो तो स्वामी सत्यप्रकाश जी द्वारा अंग्रेजी में लिखी पुस्तक 'अग्निहोत्र' (Agnihotra) जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रसायन शास्त्र के प्रोफेसर और अध्यक्ष थे पढ़ें। और दूसरी नई पुस्तक है, पंजाब विश्वविद्यालय के डॉ. रामप्रकाश जी की। वो भी रसायन शास्त्र के प्रोफेसर हैं। उनका यज्ञ–विमर्श नाम का ग्रन्थ है। बहुत अच्छा है, लेकिन वो प्रारंभिक है। उन्होंने लिखा है कि मैं एक दिशा दे सकता हूँ। इसके अतिरिक्त ४–५ लेख इस बारे में पिछले दिनों विभिन्न पत्रिकाओं में छपे हैं जो बहुत ज्ञानवर्धक हैं, बड़े उपयोगी हैं। डॉ. सत्यव्रत राजेश का लेख जनज्ञान में छपा है, आर्य मित्र में भी छपा है। डॉ. सु.बा. काले जी का लेख परोपकारी में छपा है। एक बार मेरी इच्छा हुई थी कि इन सारे लेखों को एक पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित किया जाए जिससे जन–सामान्य को लाभ हो सके। लेकिन वो बात मन में रह गई और समय बीत गया। कभी अवसर मिला तो देखेंगे।

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : अक्टूबर २०१७

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे– समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा– खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com **-संयोजक**

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को स्थान दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हों। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

कुछ तड़प-कुछ झड़प

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज संन्यास-दीक्षा शताब्दी- श्री महाराज की संन्यास-दीक्षा आर्यसमाज ही नहीं भारतीय इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। इस सम्बन्ध में परोपकारी में उनके जीवन के ऐतिहासिक महत्त्व के बहुत से उपेक्षित प्रसंग मुखरित किये जायेंगे। स्वामीजी के बलिदान के समय देश भर में ख्वाज़ा हसन निज़ामी, दिल्ली को उनकी हत्या का एक मुख्य दोषी मानकर उस पर उंगलियाँ उठाई जाने लगीं। स्वामीजी की हत्या के कुछ ही मिनटों बाद सुप्रसिद्ध उर्दू पत्रकार दीवानसिंह जी मफ़्तून बलिदान भवन पहुँच गये। आपने अपनी आत्मकथा 'नाकाबिले फरामोश'[१] में लिखा है कि घटना के घटते ही जब वीर धर्मपाल हत्यारे को वहाँ नीचे दबाये हुये उसकी छाती पर चढ़े बैठा था, उस समय वहाँ उत्तेजित जनता ख़्वाजा पर हत्या का दोष लगा रही थी।

इस ख़्वाजा ने अपने लेखों में, अपने पत्रों में श्री स्वामी जी के विरुद्ध विष-वमन करने का, मिथ्या मनगढ़न्त दोष लगाने का एक अभियान छेड़ रखा था। यह ख़्वाजा स्वयं कैसा था और क्या था? इसका वर्णन भी इन्हीं मफ़्तून जी के शब्दों में पढ़िये, ''मेरे पूरे जीवन का अनुभव है कि यदि किसी व्यक्ति के बारे में विभिन्न लोगों का एक ही मत हो तो वह निराधार नहीं होता। इसमें कुछ न कुछ सत्य अवश्य होता है। यथा यदि जनसाधारण गांधी जी को भला व महात्मा कहते हैं तो गांधी जी सचमुच श्रेष्ठ पुरुष होंगे और यदि ख़्वाजा हसन निज़ामी को जनता सरकार का गुप्तचर समझती है तो यह कथन सत्य से रहित नहीं हो सकता। कारण जनमत तभी बनता है जब लोगों को बारम्बार इन घटनाओं को देखने का अवसर प्राप्त हो।''

यह उस काल के एक प्रतिष्ठित सिक्ख पत्रकार की साक्षी है।

स्वामी जी महाराज ने अपनी उर्दू तथा हिन्दी दोनों आत्मकथाओं में यह लिखा है कि मेरी माता हमारे काशी निवास-काल में हम दोनों भाइयों (तीसरा भाई वहाँ नहीं था) को घर से बाहर जाने नहीं देती थी। तब काशी में यह प्रसिद्ध हुआ कि वेदशास्त्र का ज्ञाता बड़ा नास्तिक आया है जिसके दोनों ओर दिन में मशालें जलती हैं। शास्त्रार्थ करने के लिये आने वाले पण्डित उसके तेज से दब जाते हैं। माता को यह भय सताता था कि कहीं दोनों भाई उस जादूगर के फंदे में न फंस जायें। पिताजी से पीछे मुंशीराम जी ने सुना कि यह प्रसिद्धि अवधूत दयानन्द की थी।

ऋषि के किसी भी जीवनी लेखक ने तब तक ऋषि के काशी आगमन की कोई घटना नहीं दी थी। न जाने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के किसी जीवनी लेखक ने स्वामी जी के इस कथन पर कोई टिप्पणी क्यों नहीं दी। चर्चा बहुतों ने इस प्रसंग की करी है।

हमारा निवेदन है कि यह कथन एक कठोर सत्य है। इसे झुठलाया नहीं जा सकता। उस काल खण्ड में ऋषि गंगा-तट पर विचरण करते हुए वैदिक नाद बजा रहे थे। गंगा-तट पर लगने वाले मेलों में दूर-दूर से हिन्दू आते थे। पण्डितों से ऋषि के शास्त्रार्थ सब जन सुनते थे। पादरी टी.जे. स्कॉट ने भी गंगा तट पर उनकी धूम सुनी व दर्शन किये। फ़र्रुखाबाद से श्रीगोपाल ने पं. शालिग्राम जी को काशी के पण्डितों से मूर्तिपूजा के समर्थन में व्यवस्था लाने भेजा। वह सब नामी पण्डितों से व्यवस्था क्रय कर लाये। इससे काशी तो क्या बहुत दूर-दूर तक महर्षि की प्रसिद्धि फैली हुई थी। पं. श्री गोपाल जैसे घोर विरोधी लिखित पुस्तक से ऋषि का गुण कीर्तन करने वाली फ़ारसी कविता 'महर्षि के सम्पूर्ण जीवन चरित्र' में पढ़िये। यह कविता तथा पादरी टी.जे. स्कॉट की पुस्तक का अवतरण स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा वर्णित उनकी माता के कथन की पुष्टि करता है। तब लन्दन तक इस प्रखर सत्य की गूञ्ज सुनी गई तो फिर काशी कैसे इससे वञ्चित हो सकती थी।

आशा है प्रबुद्ध पाठक इस प्रखर सत्य (hard fact) को पूरी शक्ति से मुखरित करेंगे।

डाक्टर वैद्य जिन्होंने ऋषि मिशन की सेवा की- हमारे कृपालु सिद्धान्तनिष्ठ स्वाध्याय प्रेमी डॉ. अशोक कुमार जी गुप्त बेगूसराय बिहार ने चलभाष पर तथा पत्र लिखकर

कई विषयों पर प्रकाश डालने तथा कई प्रश्नों के उत्तर देने को कहा। हमने उन्हें कहा कि यह विषय तो बड़ा व्यापक है। इस पर तो एक तीन सौ पृष्ठ का ग्रन्थ लिखा जा सकता है। सच बात तो यह है कि हमारे प्रेमी पाठक व श्रोता ही हमें बनाते हैं।

उपरोक्त विषय पर बहुत कुछ जानते हुये भी हमने इस प्रेरणाप्रद विषय पर न तो कभी एक पूरा व्याख्यान दिया और न ही कभी ४-५ पृष्ठ का एक लेख दिया। डॉ. अशोक जी के सौजन्य से आर्यसमाज के साहित्य में यह इस विषय का प्रथम प्रामाणिक लेख माना जायेगा।

कहाँ से आरम्भ करें?- महर्षि गुजरात (पंजाब) गये तो वहाँ के एक मुसलमान फ़कीर की उनसे भेंट का वर्णन ऋषि जीवन में हमने एक स्थान पर किया है। ठीक रीति से योग की कोई क्रिया न करने से उन्हें कोई विकार हो गया। महर्षि ने बड़े स्नेह से उनको ठीक कर दिया। वह कृतज्ञता का प्रकाश करते हुये वहाँ से गदगद होकर गया। ऐसे अनेक व्यक्तियों को ऋषि ने अपनी यात्राओं में रोग मुक्त किया, परन्तु उनके सामने मुख्य उद्देश्य तो वेद-प्रचार व देश-सुधार रहा।

महात्मा विष्णुदास जी लताला वाले आर्यसमाज के आरम्भिक युग के एक पूज्य प्रतिष्ठित विद्वान् तथा आयुर्वेद के मर्मज्ञ थे। आपने काशी आदि दूरस्थ शहरों में संस्कृत व वैद्यक की शिक्षा प्राप्त की। आप अपने समय के विश्व के सबसे बड़े वैद्य काशी के श्री त्र्यम्बक जी शास्त्री की शिष्य परम्परा से थे। आपने आर्यसमाज को कई तपस्वी विद्वान्, महात्मा, प्रचारक दिये। अनेक रोगियों के जटिल रोगों को दूर किया। नि:शुल्क सेवा की । वैसे आप उदासी सम्प्रदाय के महन्त थे। आप ही ने पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द सा नररत्न, विद्वान् नेता समाज को दिया।

शूर शिरोमणि भाई श्यामलाल जी- कोई यह न सोचे कि जिज्ञासु उत्तर भारत के ही आर्यों की चर्चा करता है। हुतात्मा श्याम भाई का व्यवसाय तो वैद्यक नहीं था, परन्तु वह प्लेग, विशूचिका आदि महामारियों की अचूक औषधियाँ जानते थे। जब-जब हैदराबाद में महामारी फैली भाई जी घर-घर जाकर रोगियों को औषधि देते, सेवा करते। प्राणों के निर्मोही श्याम भाई ने उदगीर में अपने रक्त पिपासु एक मुसलमान को अपनी सेवा से बचा लिया। उसके परिवार वाले उसे छोड़कर भाग गये थे। वह अचेत पड़ा था। रोकने पर भी भाई जी हिन्दू समाज के शत्रु को बचाने पहुँच गये।

डॉ. ललिता प्रसाद जी- आर्यवीर दल के पं. देवव्रत जी शास्त्री, मुम्बई के पिता डॉ. ललिता प्रसाद हैदराबाद के आर्यों के गौरव माने जाते थे। एक बार गुलबर्गा में महामारी फैली। आर्यवीर शीश तली पर धर कर सेवा को निकले। डॉ. ललिताप्रसाद जी के पास अचूक औषधियाँ थीं। नेताओं ने रोका, परन्तु वह अपने अबोध पुत्र देवव्रत को साथ लेकर घर-घर सेवा करने जाते थे। सेवा करते-करते मेरा पुत्र नहीं मरेगा, परन्तु इसी सेवा-यज्ञ में वह परमार्थी आर्य डॉक्टर चल बसा। हमने उन्हें कभी याद किया क्या?

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज- महात्मा विशनदास जी से वैद्यक सीखी। कई हकीमों से यूनानी सीखी। सदा भ्रमणशील रहे। अपने विरक्त जीवन के आरम्भिक वर्षों में कन्याकुमारी तक पैदल प्रचार यात्रायें कीं। रोगियों को जड़ी-बूटी बताकर रोगमुक्त करते थे। धनोपार्जन का तो प्रश्न ही नहीं था। एक बार बठिण्डा से बरनाला जाने वाली सड़क पर एक विशाल गुरुद्वारे में डेरा किया। रोगी सत्संग करते, रोगमुक्त भी होते। एक दिन दोपहर के समय एक युवा देवी अकेली ही गुरुद्वारे की ओर आती दिखी। उन्होंने स्थिति को भांप लिया और उसी दिन से वैद्यक छोड़ दी। किसी को औषधि नहीं बताते थे। वैद्यों को, जो पढ़ने आते थे पढ़ा देते थे।

डॉ. देवकीनन्दन, डॉ. परमानन्द और डॉ. चिरञ्जीव जी पंजाब में आर्यसमाज के निर्माता रहे। रोगियों की सेवा करने में उनका अदम्य उत्साह किन शब्दों में बतायें। सत्यार्थप्रकाश की सबसे प्रथम विस्तृत विषय सूची बनाने वाले हमारे पूज्य डॉ. देवकीनन्दन जी ही थे। ये सब सच्चे मिशनरी व आदर्श डॉक्टर थे। डॉ. चिरञ्जीव जी ने गुजरात प्रदेश में तथा मॉरिशस में भी धर्मप्रचार तथा समाज सुधार का डंका बजाया।

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज- आर्यसमाज के इतिहास में ही नहीं भारत भर में लाखों रोगियों की नि:शुल्क चिकित्सा का स्वामी जी का कीर्तिमान रहा है और रहेगा।

उनकी सेवाओं तथा धर्मानुराग का बखान कौन कर सकता है। धन को सदैव धूलि समझकर जीवन बिताया।

डॉ. ओमप्रकाश जी गुप्त- आपने सरकार की सेवा में बड़ा नाम कमाया, यश पाया। धर्मप्रचार, जाति-सेवा के लिये उनके अदम्य उत्साह को हमीं जानते हैं। समाज के लिये आपने क्या नहीं किया?

अब पंजाब से लेकर दिल्ली तक इन जैसा एक भी समाज सेवी, समर्पित डॉक्टर वैद्य दिखाई नहीं देता। जिस समाज को कभी पं. ठाकुरदत्त जी अमृतधारा व पं. ठाकुरदास जी मुलतानी पर अभिमान था। अब उस परम्परा का एक ही रत्न डॉ. ऋषि कुमार आर्य जालंधर में इन पूर्वजों की लाज का रक्षक है। हैदराबाद सत्याग्रह के प्रथम आर्य सत्याग्रही (जिन्हें स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने जेल न जाने दिया) पं. त्रिलोकचन्द्र शास्त्री के पुत्ररत्न, नामी कुशल डॉक्टर ऋषिकुमार के सेवाभाव व समाज-सेवा पर हमें बहुत अभिमान है।

ईश्वर-अविश्वास- महर्षि दयानन्द ने मानव समाज विशेष रूप से हिन्दुओं के एक-एक सामाजिक रोग के निवारण के लिये पूरा प्रयत्न किया। डॉ. ईश्वरी प्रसाद इतिहासकार आर्यसमाजी तो नहीं थे, परन्तु ऋषि की सीख उनके गले के नीचे भी उतर गई। आपने दु:खी मन से लिखा कि हिन्दुओं ने अपने देवताओं, मूर्तियों, मन्दिरों व भगवानों को आभूषणों से मालामाल करके लुटेरे आक्रमणकारियों के सामने प्रलोभन तो रख दिया, परन्तु अपने मन्दिरों तथा भगवानों की रक्षा का समुचित उपाय न किया। लुटेरे, क्रूर आक्रमणकारियों ने न सोमनाथ का मन्दिर छोड़ा और न मथुरा काशी से लेकर कन्याकुमारी तक मन्दिर छोड़े।

आज भी कण-कण में व्यापक सर्वशक्तिमान् भगवान् की उपासना से ऊर्जा प्राप्त करके हिन्दू जीना नहीं चाहता। हिन्दू जड़-चेतन का भेद ही नहीं जानता। यह सोमनाथ, यह अमरनाथ, यह विश्वनाथ, यह भोलेबाबा पहले भी थे। यह लुटेरों को पहले न रोक सके। किसी ने एक भी न सुनी। अब भी जड़-पूजा का प्रचार करने में सब बाबों की शक्ति लगी हुई है। सब मूर्तिपूजक पूरी शक्ति से ऋषि दयानन्द के विरोध में लगे रहे। इनको तुलसीदास की सीख का न पहले कभी ध्यान था और न आज है-

बिन पग चले सुने बिन काना
बिन कर कर्म करे विधि नाना

वायु को जो वेग देता है, नदी नालों में जलधारा को जो प्रवाहित कर देता है । भूमि में दबे बीजों को जो अन्धेरे से उगा देता है। बिन हाथों पर्वतों को, भूमि को हिलाकर भूकम्प ला देता है। पत्ते-पत्ते की न्यारी प्यारी कतरन करने वाले प्रभु को न पुकार कर मुर्दों से मन्नतें व शक्ति माँगते हैं। हमें प्रवचन के पश्चात् पूना में एक बार एक ने कहा आपके ओ३म् में वह शक्ति नहीं जो राम नाम में है। उनसे पूछा राम मन्दिर को आक्रमणकारियों ने ध्वस्त कर दिया। क्यों न रोक लिया? राम का अनुकरण करते तो दुर्दशा न होती। सच्चिदानन्द प्रभु से बल पाओ। उस सर्वव्यापक पर अब भी अविश्वास है।

पाचन-शक्ति बढ़ाओ। जाति-भेद, ऊँच-नीच मिटाओ। अबोहर में अग्रवाल बनियों ने एक मरे हुये पीर के नाम पर एक सभा रजिस्टर्ड करके इस्लाम के प्रचार का अभियान चला रखा है। घर-घर लंगर खाने का, प्रचार सुनने का निमन्त्रण भेजा है। हमने पाँच वर्ष पूर्व सजग किया था। आर्यसमाज संस्थाओं ने खा लिया। जाति-पाँति मानने वाले घर वापसी का शोर मचाकर क्या कर लेंगे? योग में यम नियमों की महत्ता का क्या प्रचार हुआ? देश भर में सामूहिक बलात्कार की दुखद घटनायें थमने का नाम ही नहीं ले रहीं। ऋषि मिशन समय देने वाले युवकों की राह देख रहा है। दूसरों को ही दोष न दो अपने रोग भगाओ तब जाति में जान आयेगी।

जाति-पाँति उन्मूलन के लिये- कुछ नेता यह भ्रामक और मिथ्या प्रचार करते रहते हैं कि भारत में तो सदैव समता-भाव, नर-सेवा, दरिद्र-सेवा की परम्परा रही है। रोग को रोग न मानने और रोग को छिपाने से तो राष्ट्र-निर्माण नहीं होता। सन्त महात्माओं की नामावली रटते-रहने से तो देश में ऐक्य भावना और सुदृढ़ता नहीं आ सकती। दक्षिण भारत में सर्वाधिक छूत-छात रही और है। श्री शंकाराचार्य केरल से ही तो थे। मन्दिर प्रवेश की बात तो छोड़ो मन्दिर की सड़कों पर से कुछ जातियाँ निकल नहीं सकती थीं। स्वामी श्रद्धानन्द वायकोम सत्याग्रह के

लिये केरल क्यों गये?

स्त्रियों का मन्दिर प्रवेश आज भी वर्जित है या नहीं? क्या काशी में आज भी स्त्रियों को और ब्राह्मणेतर को वेद पढ़ाने के केन्द्र हैं? वी रामचन्द्र व मेघराज दलितोद्धार के लिये शहीद किसने किये? चौधरी चरण सिंह जी ने मुख्यमन्त्री बनकर उ.प्र. में जातियों के नाम से चलने वाली शिक्षा संस्थाओं का अनुदान बन्द करवा दिया। बड़ौत की जाट संस्थायें तब से जनता वैदिक हो गईं।

क्या वर्तमान की केन्द्र सरकार और सत्ता पक्ष एवं विपक्ष के नेता जातिसूचक शब्दों का नाम के साथ लगाना प्रतिबन्धित कर सकते हैं या फिर महाराष्ट्र वालों के सदृश शोलापुरकर, धारुरकर, लातूरकर, मगूरकर जैसे शब्दों का देश भर में प्रचलन हो। व्यवसाय से यथा डॉक्टर, प्रोफेसर, थानेदार, पटवारी, स्टेशन मास्टर, गार्ड आदि शब्दों का प्रयोग और प्रचलन भी जातिवाद का उन्मूलन कर सकता है। इससे घृणा-द्वेष की दीवारें ढह जायेंगी। कोई नेता है जो साहस करके यह कर दिखाये। भाषण व नारे तो बहुत सुन लिये।

टिप्पणी

१. दृष्टव्य- 'ना काबिले फ़रामोश' पृष्ठ ७८ से ८२ तक

आज यह भी सोचता हूँ

- प्रियवीर हेमाइना

रक्षा धर्म की जो करता है,
वह धर्मवीर कहलाता है।
वही देश का गौरव बनकर,
घर-घर पूजा जाता है।।
ज्ञान के सागर गुरु गंभीर,
बने आर्यों की पहचान।
सरल-सी मूर्ति, सत्य में निष्ठ,
वे धर्मवीर थे अति महान्।।

ऋषि मेला २०१७ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला २७, २८, २९ अक्टूबर शुक्र, शनि, रविवार २०१७ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा:- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**- ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य- **१.** स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टैन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर, रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नवम्बर देना अति आवश्यक है। ७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाईयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित किया जाएगा। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में वर्ष २०१२ से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाउस के सामने,

जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर जी** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ् जी** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित् जी** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकॉन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

ऐतिहासिक कलम....

हम किसलिये पढ़ते हैं?

आचार्य उदयवीर शास्त्री

आधुनिक 'कपिल' की उपाधि से विख्यात् आर्यसमाज के दार्शनिक विद्वान् आचार्य उदयवीर शास्त्री ने लेखन का अद्वितीय कार्य किया है। उनके लेख तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहे। उनकी पुस्तकें तो आज उपलब्ध हैं, परन्तु सर्वजनोपयोगी विषयों पर प्रकाशित उनके लेख आज जन सामान्य से अछूते ही हैं। उनके ज्ञान-सागर से प्राप्त कुछ मोतियों को परोपकारी लेखमाला के रूप में प्रकाशित कर रहा है। आशा है पाठक इससे लाभ उठायेंगे। **-सम्पादक**

यह सन् १९१५ ईसवी के फरवरी मास की घटना है। अपने अन्य सहाध्यायियों के साथ मैं कलकत्ता न्यायतीर्थ परीक्षा में उपस्थित होने के लिए गया हुआ था। सम्भवत: फरवरी समाप्त होकर मार्च लग चुका था। हम लोग १९-विधान सरणी (तब कार्नवालिस स्ट्रीट), आर्य समाज मन्दिर में ठहरे हुए थे। उसके सामने की पंक्ति में कुछ हट कर ब्राह्म-समाज का मन्दिर है।

उन दिनों कलकत्ता-बड़ा बाजार के एक दूसरी मंजिल के कमरे में एक व्यक्ति मास्टर राधामोहन गोकुल जी रहते थे। उस समय हमारे साथ संरक्षक रूप में गये श्री पं. पद्मसिंह जी शर्मा उक्त मास्टर जी के पूर्व परिचित थे, वे हमको भी एक दिन उनके दर्शनार्थ ले गये। मुझे स्मरण है, श्री शर्मा जी ने मास्टर जी को कहा था- मास्टर जी! आपका नाम भी खूब है, पति-पत्नी और निवास-स्थान सब इकट्ठा ही है, और तब से हम भी आपसी बात-चीत में मास्टर जी का नाम राधा जी, मोहन जी, गोकुल जी के रूप में प्रयुक्त करते रहे हैं।

श्री मास्टर जी तात्कालिक बंगाली क्रान्तिकारी नवयुवकों के मार्गदर्शक, सलाहकार और अवसर आने पर उन्हें उपयुक्त संरक्षण प्रदान करने वाले एक विशिष्ट व्यक्ति थे। कलकत्ता-निवास के समय हम लोग अवसर निकाल कर प्राय: प्रतिदिन उनके स्थान पर कुछ समय के लिए पहुँच जाया करते थे।

अफ्रीका के प्रदेशों में अपने आन्दोलन को किसी सीमा तक पहुँचा कर महात्मा गांधी (उन दिनों मिस्टर-गांधी) कलकत्ता इस संकल्प के साथ आये थे कि अब अपने आन्दोलन का कार्यक्षेत्र अपने देश भारत को बनाना है। तभी उनका विशाल जुलूस कलकत्ता के बाजारों में निकाला गया। जुलूस के अवसर पर जिस गाड़ी में उन्हें सवार कराया गया था, उसको खींचने के लिए घोड़े नहीं जोते गये थे उनकी जगह कुछ जोश भरे नवयुवक थे, जो अदल-बदल कर अहमहमिकया आगे बढ़ आते थे, गाड़ी को धकेलने व आगे बढ़ाने के लिए चारों ओर से लोगों ने उसे पकड़ा हुआ था, अधिक से अधिक व्यक्ति उसमें सहयोग देकर अपने सौभाग्य की सराहना करते प्रतीत हो रहे थे, उनका उत्साह और स्नेह उनके चेहरों पर स्पष्ट दिखाई दे रहा था। उस सौभाग्य की लूट में अपने साथियों सहित इस लेखक को भी उपयुक्त अंश प्राप्त हुआ था। हमारा यह प्रथम ही अवसर था महात्मा गांधी के दर्शन का।

अगले दिन हम लोग मास्टर जी के पास गये, और आग्रह किया, कि कृपा कर आप गांधी जी से हम लोगों की मुलाकात का प्रबन्ध करा दें। कोई खास बात न थी, केवल बालकों का उत्सुकतापूर्ण हठ। मास्टर जी ने जल्दी ही इसका प्रबन्ध करा दिया और वे स्वयं हम लोगों के साथ ब्राह्म समाज मन्दिर में गांधी जी के पास गये, वे तब वहीं ठहरे हुए थे। अपने परिचय के साथ मास्टर जी ने हमारी ओर संकेत कर कहा, ये गुरुकुल महाविद्यालय-ज्वालापुर (हरिद्वार) के छात्र हैं, कलकत्ता परीक्षा देने आये हैं, आपके दर्शनों के लिए उत्सुक थे। हम लोग प्रणाम कर आदेश पा, सामने बिछी दरी पर बैठ गये। गांधी जी मसनद के सहारे गदीले सफेद बिछावन पर कुछ टेढ़े होकर बैठे हुए थे। हमसे पढ़ाई और परीक्षा के विषय में पूछ कर मास्टर जी से बात करने लगे।

उनकी बातचीत देश की तात्कालिक राजनीति आदि के विषय में चल पड़ी, जो उस समय हमारी समझ से

बाहर थी। वे सब बातें हमें अधिक रुचिकर प्रतीत नहीं हो रही थीं। थोड़ी बातचीत के बाद हमें ऐसा भी अनुभव हुआ था कि अपनी बात कहते समय मास्टर जी के शब्दोच्चारण में तथा चेहरे पर भी कुछ रोष का आभास झलक रहा है, पर गांधी जी की मुद्रा में तथा बात कहने के ढंग में किसी प्रकार का व्यतिक्रम प्रतीत नहीं हो रहा था, वे जैसे बड़े शान्त भाव से अपने विचारों को एक ही धारा में समझाने का प्रयत्न करते प्रतीत हो रहे थे। थोड़ी देर उनकी बातचीत का सिलसिला और चला, फिर मास्टर जी ने हमारी ओर ऐसे संकेत भरी दृष्टि से देखा कि अब हमें चलने की आज्ञा लेनी चाहिए।

सन् १९१५ ईसवी के अप्रैल मास में हरिद्वार तीर्थ कुम्भ का मेला जुड़ने वाला था। गांधी जी ने बातचीत के दौरान ऐसा विचार प्रकट किया कि वे कुम्भ मेले के अवसर पर हरिद्वार जाने का इरादा रखते हैं। उनके अगले कार्यक्रम का यह एक आवश्यक भाग है, ऐसा उनकी बातचीत से ज्ञात हुआ। हम लोग प्रणाम कर जाने के लिए जब खड़े हो गये, हाथ जोड़कर मैंने बहुत आग्रह और विनय के साथ गांधी जी से निवेदन किया कि आप जब हरिद्वार पधारें तो गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर में अवश्य कुछ दिन ठहरने का अनुग्रह करें। उन्होंने प्रार्थना को स्वीकार किया और-''हम जरूर आयेंगे'' कहकर हार्दिक आश्वासन दिया। हम लोग पुनः प्रणाम कर बाहर आ गये।

ब्राह्मसमाज मन्दिर से बाहर आकर फुटपाथ पर मास्टर जी ने हमें रोक कर कहा-आप लोग सामने आर्यसमाज मन्दिर जायें, मैं अपने घर जा रहा हूँ। आज की बातचीत से गांधी के प्रति जो मेरी श्रद्धा थी, उसमें मुश्किल से दो आने शेष रह गई है, चौदह आने श्रद्धा उड़ गई है। यह बात कहते हुए मास्टर जी के चेहरे पर जो भाव अभिव्यक्त हो रहे थे, उनसे साफ जाहिर हो रहा था कि गांधी जी के प्रति जिन आशाओं को यह व्यक्ति चिरकाल से संजोये था, उन पर पानी फिर गया है। हिमपात से मुरझाई उन लताओं को किसी प्रकार अब हरा करना कठिन था। मैंने कौतूहल से पूछा-मास्टर जी! ऐसी क्या बात हो गई? आप इतने अवसन्न क्यों हो उठे हैं? मास्टर जी उसी भावावेश में कहने लगे, गांधी जी राजनीति में अपना गुरु गोखले को बनाना चाहते हैं, इस खुशामदी नीति से देश का क्या भला होगा, इस समय तो तिलक की राजनीति की आवश्यकता है। तीव्र क्रान्ति ही देश का कुछ भला कर सकती है।

पहले कह चुका हूँ, मास्टर जी कलकत्ता के तात्कालिक युवक-क्रान्तिकारियों के सहयोगी थे, और राजनीति में तिलक के मार्ग को ही उपयुक्त समझते थे। उस समय मास्टर जी से अधिक चर्चा को असामयिक समझ कर अपने-अपने निवास को हम लोग चले गये थे। कतिपय वर्षों के अनन्तर जब मास्टर जी के दर्शन गुरुकुल के वार्षिक उत्सव पर एक बार हुए, तब वे महात्मा गांधी के अनुरक्त भक्त बन चुके थे। यह उनके जीवन काल का ढलता उत्तरार्ध था।

श्री गांधी जी अपने दिये आश्वासन के अनुसार सम्भवतः अप्रैल के बिल्कुल प्रारम्भिक दिनों में गुरुकुल महाविद्यालय पधारे और लगभग एक सप्ताह वहाँ ठहरे। प्रतिदिन एक निश्चित समय उनके प्रवचन सुनने तथा साधारण चर्चा के लिए हमें उपलब्ध होता था। उसमें गुरुकुल के प्रायः सभी छात्र उपस्थित रहते थे, इन प्रसंगों का मुझे अधिक स्मरण नहीं रहा है। वैसे महात्मा गांधी उस अवसर के बाद भी गुरुकुल महाविद्यालय कई बार उत्सवों आदि पर पधारे। उनके प्रवचन सुनता रहा हूँ और उनका साहित्य भी पढ़ता रहा हूँ पर उनके कुछ अवशेष ही कदाचित् कहीं किसी कोने में मस्तिष्क के बिखरे पड़े हों, पर पहली बार जो एक बात उनके मुख से मैंने सुनी, उसको मैं कभी नहीं भूल पाया हूँ और आगे भी शेष जीवन में उसके भूल जाने की कोई सम्भावना प्रतीत नहीं हो रही।

उस समय लगभग एक सप्ताह रहने के बाद श्री गांधी जी ज्वालापुर गुरुकुल से विदा हो रहे थे, सब अध्यापक और छात्र-वर्ग उन्हें विदा देने की आदर व स्नेहपूर्ण भावनाओं के साथ घेरे खड़े थे, सबसे उच्च श्रेणी का छात्र होने के कारण मैं प्रायः सबसे आगे और उनके अधिक समीप खड़ा था। विदाई के अन्तिम क्षणों में साहस करके मैंने उनसे एक बात पूछी। कई दिन से उनके प्रवचन सुनने के बावजूद मेरा वैसा पूछना बाह्यवृत्ति तथा उपेक्षा की भावना का स्पष्ट द्योतक था, पर न मैं इन बातों को उस समय

समझता था, न मुझे इसकी चिन्ता थी। मैंने हाथ जोड़कर विनीत भाव से बाल सुलभ चञ्चलता के साथ उनसे पूछा, अब आप जा रहे हैं, कृपया इस बात पर प्रकाश डालिए कि पढ़ाई के बाद हमारे जीवन का उद्देश्य क्या होना चाहिए?

उन्होंने जो उत्तर दिया, निश्चित ही उस समय मैं उसे नहीं समझ पाया हूँगा, पर वे शब्द कभी भूले नहीं। आज उन्हें स्मरण कर जब सोचता हूँ तो उनकी गहराई का कुछ अन्दाज कर पाता हूँ। उनका उत्तर था–''पढ़ाई के बाद जीवन का उद्देश्य क्या होना चाहिये, इसे समझने के लिये ही तुम पढ़ रहे हो, यदि तब भी समझ में न आवे, तो मेरे पास आ जाना, मैं बता दूँगा''। स्पष्ट है, कि इस प्रश्न का फिर अवसर नहीं आया।

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि-यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जो विद्वान् लोग परोपकार बुद्धि से विद्या का विस्तार करने, सुगन्धि, पुष्टि, मधुरता रोगनाशक गुणयुक्त पदार्थों का यथायोग्य मेल अग्नि के बीच में उनका होम कर शुद्ध वायु, वर्षा का जल वा ओषधियों का सेवन करके शरीर को आरोग्य करते हैं वे इस संसार में अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५८

राजा और प्रजाजन परस्पर सम्मति से समस्त राज्य व्यवहारों की पालना करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.२६

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य, उत्तम शिक्षा, विद्या, शरीर और आत्मा का बल, आरोग्य, पुरुषार्थ, ऐश्वर्य, सज्जनों का संग, आलस्य का त्याग, यम-नियम और उत्तम सहाय्य के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु

बैंक का नाम – **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या – **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

आगामी ऋषि मेला

२७, २८, २९ अक्टूबर २०१७, शुक्र, शनि, रविवार

स्थान– ऋषि उद्यान, अजमेर

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष-साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष-ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिखकर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, अन्यथा शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

भगवान् बुद्ध और वैदिक धर्म

प्रिंसिपल अविनाशचन्द्र बोस

यह पठनीय लेख सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् और अंग्रेज़ी के वैदिक साहित्यकार डॉ. अविनाशचन्द्र बोस का 'आर्य' साप्ताहिक के १५ जून १९५८ के अंक में छपा था। स्थायी महत्त्व का यह लेख परोपकारी के पाठकों को भेंट है। डॉ. बोस, पं. अयोध्या प्रसाद जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी की देन थे। आप पूज्य उपाध्याय जी, डॉ. बालकृष्ण जी, प्रिं. महेन्द्रप्रताप और पं. धर्मदेव जी के सहयोगी मित्र आर्य विचारक थे।

राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

भारत के लिये महात्मा बुद्ध की २५०५वीं जन्म शताब्दी का मनाना एक महत्वपूर्ण घटना थी। इसमें,भारत के इस महान् मुनि ने, जिसे पौराणिक हिन्दुओं ने भी नवम अवतार के रूप में सम्मानित किया और जिसका समस्त सुधारवादी हिन्दुओं ने उसके महान् आदर्शवाद और श्रेष्ठ व्यक्तित्व के लिये आदर किया, युग निर्माता के रूप में जो कार्य किया था, उसे प्रमुखता दिलाई। ऐतिहासिक दृष्टि से भगवान् बुद्ध के विषय में ऐसा बहुमूल्य साहित्य लिखा गया है, जिसमें स्व. श्री आनन्दकुमार स्वामी और श्रीमती राइस डेविड्स तथा डॉ. राधाकृष्णन् जी द्वारा लिखित पुस्तकों का समावेश है और वर्तमानकाल में भी इस विषय पर कई लेख लिखे गये हैं, किन्तु अधिक साहित्य की आवश्यकता और आशा की जाती है, विशेषत: वेदों के साथ महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं की शृंखला के विषय में।

गत कई वर्षों से हमारे विद्यालयों की पाठ्य पुस्तकों के द्वारा यह पढ़ाया जाता रहा है कि बौद्ध मत ब्राह्मणवाद का विरोधी था और यह वैदिक धर्म के विरुद्ध एक क्रान्ति थी। साथ ही वैदिकधर्म के विषय में जो सूचना हमारे युवक गत शताब्दी से अधिक काल से प्रतिवर्ष प्राप्त करते रहे हैं, वह यह है कि इस में पशुओं की बलि दी जाती थी और भगवान् बुद्ध ने गरीब पशुओं को वैदिक पुरोहितों से बचाने का यत्न किया। इस वर्णन ने वेद और वैदिक धर्म के विषय में वास्तविक तथ्यों पर आवरण डाल दिया है। हमारे विद्यार्थियों को यह नहीं बतलाया जाता कि महात्मा बुद्ध के मन में वैदिक ब्राह्मणों के चरित्र के लिये इतने आदर का भाव था कि वे सब वर्गों में से लोगों को ब्राह्मण बनाना चाहते थे, जो ब्राह्मणों के गौरव में भाग ले सकें (देखो धम्मपद ब्राह्मणवग्ग) और यह बात कम महत्व की नहीं है कि महान् अशोक ने अपने शिलालेखों के द्वारा जनता को शिक्षा देते हुए बौद्ध भिक्षु प्रचारक श्रमणों से पूर्व सर्वत्र ब्राह्मणों का नाम लिया है। अब तक हमारे विद्वानों ने भारत में बौद्ध मत के इतिहास को शुद्ध दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने का पर्याप्त प्रयत्न नहीं किया। बहुत से विदेशी विद्वानों की कठिनाई यह है कि वे यह कल्पना नहीं कर सकते कि एक नवीन मत को जिसने पुराने धर्म की आलोचना की और लोगों को परम्परागत मार्ग से हटाया पुराने धर्म के मानने वाले उसे किसी आदर से देख सकते हैं और नवीन मार्गदर्शक जो कई अंश में क्रान्तिकारी है, प्राचीन परम्परागत धर्म के नेताओं में आदरयुक्त स्थान प्राप्त कर सकता है।

पं. धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड की ''Mahatma Buddha an Arya Reformer'' (महात्मा बुद्ध एक आर्य सुधारक) एक अत्यन्त अभिनन्दनीय प्रकाशन है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का वेद के साथ सम्बन्ध की दृष्टि से अनुशीलन किया गया है और इस विषय पर नवीन प्रकाश डाला गया है। उदाहरणार्थ पण्डित जी ने बताया है कि 'ललित विस्तार' में बुद्ध के विषय में स्पष्ट लिखा है कि-

स ब्रह्मचारी गुरु गेहवासी, तत्कार्यकारी विहितान्नसेवी।
सायं प्रभातं च हुताशसेवी, व्रतेन वेदाश्च समध्यगीष्ट।।

अर्थात् सिद्धार्थ ने ब्रह्मचारी बन कर गुरुकुल में निवास किया, उनकी सेवा की, शास्त्र-विहित आहार का सेवन, प्रात:सायं अग्निहोत्र तथा ब्रह्मचर्य के व्रत का पालन करते हुए वेदों का अध्ययन किया।

इस पुस्तक का सप्तम अध्याय उन लोगों की आँखें खोल देगा जो समझते रहे हैं कि बुद्ध वेदों का विरोधी था।

बुद्ध की वेदगू अथवा वेदज्ञ की परिभाषा जैसे कि सुत्तनिपात श्लोक ५२९ में बतायी गई है यह है कि–

वेदानि विचेग्य केवलानि, समणानं यानिऽपत्थि ब्राह्मणानम्।
सब्ब वेदनासु वीतरागो, सब्बं वेदमनिच्च वेदगू सो।।

अर्थात् जिसने सब वेदों का अध्ययन किया है और जो सारे संसार को अनित्य समझते हुए सब वासनाओं, आसक्ति और राग से रहित हो गया है, वह वेदज्ञ है।

पं. धर्मदेव जी ने बताया है कि महात्मा बुद्ध का वेदविषयक यह विचार अंग्रेजी में बौद्ध ग्रन्थों के अनुवाद का अध्ययन करने वालों से इसलिए अज्ञात रहा कि इन अनुवादों में वेदगू का अर्थ, वेदज्ञ के स्थान में केवल ज्ञानी या सिद्ध इत्यादि कर दिया गया है और जहाँ सुत्तनिपात श्लोक ७९२ आदि में–

विद्वां च वेदेहि समेच्च धम्मं न उच्चावचं गच्छति भूरिपञ्ञो।

यह कहा गया है कि बुद्धिमान् वेदों के द्वारा धर्म का ज्ञान प्राप्त करके डांवाडोल नहीं होता, वहाँ अंग्रेजी अनुवादों में केवल 'विज़डम' वा 'ज्ञान' ऐसा अर्थ कर दिया गया है, यथार्थ नहीं। उन्होंने सुत्तनिपात ५६८ को भी इस वेद विषयक प्रकरण में उद्धृत किया है, जहाँ कहा है कि–

अग्गिहुत्तमुखा यञ्ञा, सावित्ती छन्दसो मुखम्।

अर्थात् यज्ञों में प्रधान अग्निहोत्र है और वेद का मुख सावित्री वा गायत्री मन्त्र है। इस प्रकार के वचनों से महात्मा बुद्ध का वेद और सच्चे वैदिक विद्वानों के लिये आदर का भाव सूचित होता है। पण्डित जी ने बुद्ध को पंचशील अष्टांग मार्ग आदि विषयक शिक्षाओं की वेदों और वैदिक साहित्य में दिये वचनों से समानता को भी दिखाया और इस सामान्य विश्वास का खण्डन किया है कि महात्मा बुद्ध नास्तिक थे। महात्मा बुद्ध ने वैदिक शब्द आर्य का जो बार-बार प्रयोग किया है उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि उन्हें इससे कितना प्रेम था। वे भी वेदों के '**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**' इस आदेश के अनुसार सबको आर्य अर्थात् श्रेष्ठ धर्मात्मा अहिंसादि व्रतपालक बनाना चाहते थे।

श्री आनन्द कुमार स्वामी ने अपनी पुस्तक 'Buddha and the Gospel of Buddhism' में एक स्थान पर कहा है कि बुद्ध का विशाल वैदिक विचार जगत् में एक अल्प स्थान है। विज्ञान भिक्षु के विषय में कहा जाता है कि उन्होंने बौद्ध दर्शन की सप्तम वैदिक दर्शन के रूप में गणना की थी। संयुक्त निकाय में गौतम ने एक प्राचीन नगर का वर्णन किया जो चारों ओर से घने जंगल से घिर गया था और एक राजा ने उस घने जंगल को साफ करा दिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि उस नगर की शोभा द्विगुणित हो गई। इस वर्णन के पश्चात् भगवान बुद्ध ने कहा कि मैंने भी इसी प्रकार एक पुराने मार्ग को- जीवन के प्राचीन मार्ग को खोज निकाला है। प्राचीनकाल के बुद्धिमान् लोग इस मार्ग पर चला करते थे। (संयुक्त निकाय १२, ६५, १९-२१) मैं भी इसी मार्ग पर आगे बढ़ता जा रहा हूँ। (१२, ६५, २२)

पण्डित धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड ने यह सिद्ध करने का यत्न किया है कि महात्मा बुद्ध सचमुच ऐसा ही कर रहे थे और उन्होंने प्राचीन वैदिक ऋषियों और ज्ञानियों के मार्ग के विषय में प्रामाणिक सूचना देने का प्रयास किया है। उन्होंने जो आवश्यक महत्त्वपूर्ण कार्य इस सम्बन्ध में किया है, इसके लिये मैं उन्हें बधाई देता हूँ, पर मैं यह भी आशा करता हूँ कि विशाल वैदिक साहित्य और साथ ही बौद्ध साहित्य में जो विशारदता उन्हें प्राप्त है, वे अपने इस विषय का और भी अधिक विस्तृत विवेचन करके वैदिक धर्म और बौद्ध मत के सम्बन्ध के विषय में जो बहुत काल से भ्रान्तियाँ चली आ रही हैं, उनके निवारण में सहायक होंगे।

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

।। ओ३म्।।

वेद गोष्ठी २०१७ के लिए निर्धारित विषय

वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त

उपशीर्षक :

1. ऋग्वेद में शिक्षा चिन्तन की मीमांसा
2. ऋग्वेद में शिक्षा के प्रमुख सिद्धान्त और उनकी विवेचना
3. ऋग्वेद में शिक्षक और शिष्य सम्बन्धों की मीमांसा
4. ऋग्वेद में शिक्षा का पाठ्यक्रम - विश्लेषणात्मक अध्ययन
5. ऋग्वेद में शिक्षण-विधि के विभिन्न आयाम
6. ऋग्वेद के प्रमुख शिक्षाशास्त्री और उनके विचार
7. यजुर्वेद में शिक्षा चिन्तन की मीमांसा
8. यजुर्वेद में शिक्षा के प्रमुख सिद्धान्त और उनकी विवेचना
9. यजुर्वेद में शिक्षक और शिष्य सम्बन्धों की मीमांसा
10. यजुर्वेद में शिक्षा का पाठ्यक्रम - विश्लेषणात्मक अध्ययन
11. यजुर्वेद में शिक्षण-विधि के विभिन्न आयाम
12. यजुर्वेद के प्रमुख शिक्षाशास्त्री और उनके विचार
13. सामवेद में शिक्षा चिन्तन की मीमांसा
14. सामवेद में शिक्षा के प्रमुख सिद्धान्त और उनकी विवेचना
15. सामवेद में शिक्षक और शिष्य सम्बन्धों की मीमांसा
16. सामवेद में शिक्षा का पाठ्यक्रम - विश्लेषणात्मक अध्ययन
17. सामवेद में शिक्षण-विधि के विभिन्न आयाम
18. सामवेद के प्रमुख शिक्षाशास्त्री और उनके विचार
19. अथर्ववेद में शिक्षा चिन्तन की मीमांसा
20. अथर्ववेद में शिक्षा के प्रमुख सिद्धान्त और उनकी विवेचना
21. अथर्ववेद में शिक्षक और शिष्य सम्बन्धों की मीमांसा
22. अथर्ववेद में शिक्षा का पाठ्यक्रम - विश्लेषणात्मक अध्ययन
23. अथर्ववेद में शिक्षण-विधि के विभिन्न आयाम
24. अथर्ववेद के प्रमुख शिक्षाशास्त्री और उनके विचार
25. वेदांग में प्रमुख शिक्षा के सिद्धान्त
26. वैदिक काल में शिक्षा दर्शन
27. उपनिषदों में शिक्षण की विभिन्न शैलियाँ
28. उपनिषदों में आचार्य और शिष्य सम्बन्धों की विवेचना
29. उपनिषदों में अध्ययन का पाठ्यक्रम
30. उपनिषदों के संदर्भ में गुरुकुलों की विवेचना
31. उपनिषदों में शिक्षा का परम उद्देश्य
32. उपनिषदों में शिक्षण-विधि की विवेचना
33. प्राचीन भारतीय शिक्षा दर्शन
34. प्राचीन भारत में शिक्षण-विधि और प्रकार
35. प्राचीन भारत में शिक्षा के विभिन्न उपागमों का अध्ययन
36. वैदिक साहित्य में आचार्य की भूमिका
37. मनुस्मृति में शिक्षा के सिद्धान्त
38. षड्दर्शनों में शिक्षण के सिद्धान्त
39. षड्दर्शनों में आचार्य-शिष्य सम्बन्धों का आलोचनात्मक विवेचन
40. न्याय-वैशेषिक दर्शनों में शिक्षा के सिद्धान्त
41. न्याय-वैशेषिक दर्शनों में शिक्षण की प्रमुख विधि
42. सांख्य-योग में शिक्षा दर्शन
43. वैदिक शिक्षा दर्शन में शिक्षण संस्थानों का प्रशासन-आर्थिक परिप्रेक्ष्य में
44. वैदिक शिक्षा दर्शन एवं आधुनिक शिक्षा-शास्त्री विशेषत: महर्षि दयानन्द सरस्वती के संदर्भ में
45. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त और महर्षि दयानन्द
46. वैदिक शिक्षण-विधियाँ उनकी क्रियात्पक पक्ष के संदर्भ में
47. वैदिक शिक्षा सिद्धान्त और आधुनिक भारतीय शिक्षा-शास्त्री
48. प्राचीन भारत में शिक्षा-दर्शन, उसकी प्रक्रिया एवं साधन
49. वैदिक शिक्षा के सिद्धान्त मानव के परम लक्ष्य के संदर्भ में
50. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त-बाल शिक्षा के संदर्भ में
51. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त : महिला शिक्षण के संदर्भ में

52. वैदिक शिक्षा चिन्तन और महिला शिक्षण की प्रक्रियाएँ
53. वैदिक शिक्षा एवं प्राचीन शिक्षा-शास्त्री
54. वैदिक महिला शिक्षा-शास्त्री और उनके सिद्धान्त
55. वैदिक शिक्षण की पद्धतियाँ और आधुनिक शिक्षण की विधियों का तुलनात्मक अध्ययन
56. वैदिक शिक्षा के सिद्धान्त और समकालीन भारतीय शिक्षा-शास्त्री : एक तुलनात्मक विवेचन
57. वैदिक शिक्षा में मनोविज्ञान की विवेचना
58. वैदिक शिक्षा में अधिगम प्रक्रिया और सिद्धान्त
59. वैदिक शिक्षा में अभिप्रेरण के प्रमुख सिद्धान्त
60. वैदिक शिक्षा में व्यक्तित्व एवं उसके मापन की विधियाँ
61. वैदिक शिक्षा में बुद्धि विवेचन एवं बुद्धि विकास के विभिन्न प्रकार
62. वैदिक शिक्षा में व्यक्तित्व का स्वरूप, अर्थ, परिभाषा और व्यवहार के संदर्भ में
63. वैदिक शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा
64. वैदिक शिक्षा में वातावरण का महत्व
65. वैदिक शिक्षा में सृजनात्मकता के सिद्धान्त
66. वैदिक शिक्षा का परम लक्ष्य
67. महर्षि दयानन्द और वैदिक शिक्षा
68. वैदिक शिक्षा में अभिरुचि और मनोविज्ञान के प्रमुख सिद्धान्त
69. वैदिक शिक्षा और भाषा अध्ययन
70. वैदिक शिक्षा और विज्ञान शिक्षण की विधियाँ
71. वैदिक शिक्षा और स्वास्थ्य चिन्तन
72. वैदिक शिक्षा में योग की भूमिका
73. वैदिक शिक्षा में आचार्य चिन्तन की भूमिका
74. स्मृतियों में शैक्षिक विचार - एक अध्ययन
75. वैदिक शिक्षा : वर्तमान अपेक्षायें और चुनौतियाँ
76. वैदिक शिक्षा : नारी सशक्तिकरण के संदर्भ में
77. वैदिक शिक्षा में मूल्यों की उपादेयता - एक समीक्षा
78. वैदिक शिक्षा : शिक्षक और शैक्षणिक तंत्र
79. 21वीं सदी में वैदिक शिक्षा - एक मूल्यांकन
80. विकास की दहलीज पर वैदिक शिक्षा की भूमिका
81. राजधर्म के परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा
82. वैदिक शिक्षा : कृषि के संदर्भ में
83. वैदिक शिक्षा - शहरीकरण के संदर्भ में
84. वैदिक शिक्षा में एकाग्रता बोध
85. वैदिक शिक्षा में शारीरिक शिक्षा
86. वैदिक शिक्षा में अभिभावक की भूमिका
87. वैदिक शिक्षा तथा विद्यालय (गुरुकुल) प्रशासन
88. वैदिक शिक्षा में दीक्षान्त परम्परा के तत्व
89. वेदो में शैक्षिक निहितार्थ की प्रासंगिता
90. वैदिक शिक्षा का मूल्य तत्व - संस्कार शिक्षा - एक मौलिक चिन्तन
91. ब्राह्मण ग्रन्थों में शिक्षा के सिद्धान्त
92. वैदिक शिक्षा और समय की चुनौतियाँ
93. वैदिक शिक्षा और अनुसंधान - एक समीक्षा
94. वैदिक शिक्षा-सिद्धान्त बाल शिक्षा के लिए व्यापक उपागम - एक अध्ययन
95. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त - व्यवसायीकरण शिक्षा के संदर्भ में
96. वेदों में शिक्षा-सिद्धान्त - सामाजिक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में
97. वैदिक शिक्षा और अध्ययन के विभिन्न विषय
98. वैदिक शिक्षा और गणित शिक्षण
99. वैदिक शिक्षा और कला के सिद्धान्त
100. वैदिक शिक्षा में कला शिक्षण
101. वैदिक शिक्षा और राज्य की भूमिका
102. वैदिक शिक्षा-शासन के संदर्भ में
103. वैदिक शिक्षा और मानव निर्माण
104. वैदिक शिक्षा में शिक्षक के कर्त्तव्य और दायित्वों की विवेचना
105. वैदिक शिक्षा - बुनियादी शिक्षा के ढाँचे के संदर्भ में
106. वैदिक शिक्षा में जीवन मूल्य
107. वैदिक शिक्षा - भाषा, समाज और संस्कृति के संदर्भ में
108. वैदिक शिक्षा में लिंग समानता
109. वैदिक शिक्षा में नैतिकता
110. वैदिक शिक्षा में मानव मूल्य
111. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त और समान शैक्षिक अवसर
112. वेदों में शिक्षा में गुणवत्ता और विषय-वस्तु
113. वेदों में शिक्षा सिद्धान्त और पाठ्यक्रम की गतिपरकता
114. वैदिक शिक्षा में पर्यावरण-उपागम - एक विवेचन
115. वेदों में शिक्षक-शिक्षा के मूल तत्त्व
116. वेदों में शिक्षा सिद्धान्त - इक्कीसवीं शताब्दी के लिए

त्रैतवाद

(महर्षि दयानन्दाभिमत मन्तव्यः वैदिक परिप्रेक्ष्य में)

नवीन मिश्र

तीन पदार्थ नित्य हैं-१. ईश्वर २. जीव ३. प्रकृति। वेद के लगभग सभी मन्त्रों से ये सिद्धान्त प्रतिपादित होता है। ईश्वर- स्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्रों में ''कस्मै देवाय हविषा विधेम'' के अर्थ को यदि हम ध्यान से देखें तो महर्षि ने अलग-अलग मन्त्रों में अलग-अलग ढंग से एक ही बात को कहा है। प्रार्थना के चौथे मन्त्र में ऋषि लिखते हैं कि ''हम लोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप, सकल ऐश्वर्य के देने हारे परमात्मा के लिए (हविषा) अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञा पालन में समर्पित करके विशेष भक्ति करें।'' इससे स्पष्ट है कि तीन पदार्थ हैं-१. सुखस्वरूप, सकल ऐश्वर्य का देने हारा परमात्मा (ईश्वर) २. विशेष भक्ति करने वाले हम लोग (जीव) ३. सकल उत्तम सामग्री (प्रकृति)। वास्तव में महर्षि दयानन्द के सम्पूर्ण कार्य को यदि हम एक वाक्य में कहना चाहें तो कह सकते हैं कि महर्षि ने अपना सम्पूर्ण जीवन ईश्वर की आज्ञा पालन (वेद के प्रचार) में समर्पित करके सब सामर्थ्य से योगाभ्यास और अति प्रेम से विशेष भक्ति की।

अब हम आर्यसमाज के प्रथम नियम को देखें-''सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।'' इसमें -

१. सबका आदि मूल परमेश्वर
२. उसकी विद्या को जानने वाला जीव
३. तीसरा तत्व पदार्थ (प्रकृति)

जो मतावलम्बी आर्यसमाज पर आक्षेप करते हैं कि आर्य समाज ईश्वर को नहीं मानता है या आर्य समाज नास्तिक है, उनका उत्तर देने के लिए आर्यसमाज का ये प्रथम नियम ही पर्याप्त है। जब हम सबका आदिमूल ईश्वर को कह रहे हैं तो इससे अधिक आस्तिकता का और प्रमाण क्या होगा। आर्यसमाज के द्वितीय नियम में ईश्वर के स्वरूप का वर्णन करते हुए महर्षि लिखते हैं कि उसी (ईश्वर) की उपासना करनी योग्य है। सभी सज्जन विचार करें कि नास्तिकता सच्चिदानन्द ईश्वर की उपासना को कहेंगे या जड़ पूजा को?

आर्यसमाज का प्रथम नियम वेद के निम्नांकित मन्त्र में वर्णित त्रैतवाद के सिद्धान्त को ही प्रतिपादित करता है-

ईशावास्यमिदꣳसर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

''अर्थात् इस संसार में जितने भी चर व अचर पदार्थ है वो सभी ईश्वर से परिपूर्ण हैं, इसमें त्यागपूर्वक भोग करो। लालच मत करो। ये धन भला किसका है।''

मन्त्र से स्पष्ट है कि वह ईश्वर इस सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ में अन्दर व बाहर व्याप्त हो रहा है। जो पदार्थ सर्वत्र व्यापक होगा। वही सब जगह नियन्त्रण रख सकता है। ईश्वर अनन्त ज्ञानवान् एवं अनन्त सामर्थ्य से युक्त है। ईश्वर के नियम जड़ एवं चेतन सभी पदार्थों पर सभी काल में एक जैसे लागू होते हैं।

ये सम्पूर्ण दृश्यमान जगत् उस परमपिता परमात्मा के अनन्त ज्ञान की कलात्मक अभिव्यक्ति है। सृष्टि की रचना में तीन पदार्थों की आवश्यकता है। एक रचना करने वाला, दूसरा जिसके लिए ये संसार बनाया-वे अनन्त जीवात्माएँ, तीसरा प्रकृति के मूल तत्व। तीन पदार्थ नित्य हैं ईश्वर, जीव एवं प्रकृति। अर्थात् ईश्वर ने जीवों के कल्याण के लिए प्रकृति के मूलतत्त्वों से इस सृष्टि की रचना की है।

प्रकृति जड़ है, ज्ञान शून्य है, अतः प्रकृति में स्वयं कुछ भी बनने का सामर्थ्य नहीं है। जीव अणु मात्र है 'एकदेशीय है' बिना ईश्वर की सहायता के कुछ भी नहीं कर सकता है, फिर इस सृष्टि की रचना कैसे हुई? किस प्रयोजन से की? किससे की? इन प्रश्नों का उत्तर त्रैतवाद से अर्थात् ईश्वर, जीव एवं प्रकृति से ही मिल सकता है। प्रकृति में किसी भी पदार्थ की रचना देखें तो मालूम होता है कि इस विशेष रचना के लिए विशेष मस्तिष्क भी चाहिए। समस्त ब्रह्माण्ड में सर्वत्र एक जैसी व्यवस्था एवं नियम लागू होते हैं। ये नियम वही लागू कर सकता है जो सर्वत्र व्यापक हो। इसी सर्वत्र व्यापक सत्ता को-जो विशेष

एवं अनन्त सामर्थ्य से युक्त है–वेद में ईश्वर संज्ञा दी गई है। उस ईश्वर ने जीवों के कल्याण के लिए प्रकृति के मूल पदार्थों से इस सृष्टि का निर्माण किया है। इस सृष्टि की आयु चार अरब, बत्तीस करोड़ वर्ष की होती है तथा इतनी ही अवधि प्रलय काल की है। प्रलय काल में जीव सुषुप्ति अवस्था में मूर्छित जैसे पड़े रहते हैं। महर्षि कहते हैं जिस प्रकार आँख का काम है देखना, उसी प्रकार ईश्वर का स्वाभाविक गुण है सृष्टि की रचना करके सभी जीवों का उपकार करना। इसके अलावा पूर्व सृष्टि में जीवों द्वारा किए हुए पाप–पुण्यों का फल भी ईश्वर सृष्टि की रचना करके प्रदान करता है। अत: हम कह सकते हैं कि परमपिता परमात्मा ने प्रकृति के द्वारा सृष्टि की रचना जीवों के कल्याण के लिए की है। त्रैतवाद के सम्बन्ध में वेद का एक और प्रमाण–

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते
तयोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्यनश्नन्न्यो अभिचाकशीति।।

ऋग्वेद के इस मन्त्र में स्पष्ट है कि जीव तथा ब्रह्म परस्पर सखा हैं व्याप्य–व्यापक भाव से संयुक्त हैं। तीसरा अनादि पदार्थ वृक्ष अर्थात् प्रकृति है जो प्रलय के समय छिन्न–भिन्न होकर मूल अवस्था में रहती है। अर्थात् तीन पदार्थ नित्य हैं ईश्वर, जीव एवं प्रकृति।

जीव प्रकृति रूपी वृक्ष के फल चखता है इसलिए सुख–दु:ख का भोक्ता है तथा ब्रह्म जो सर्वत्र व्यापक एवं प्रकाशमान है वह द्रष्टा है, साक्षी है। ईश्वर देखता है कि जीव जो कि उसका सखा है अन्य जीवों से कैसा व्यवहार करता है क्योंकि परमात्मा समस्त जीवों का सखा है अर्थात् सबका कल्याण चाहने वाला है। जीवों के परस्पर व्यवहार में जो त्रुटियाँ होती हैं परमात्मा साक्षी होने के कारण उनका यथायोग्य फल देता है।

अब हम सिद्ध करेंगे कि जीव ईश्वर का अंश नहीं है। न जीव कभी ईश्वर बन सकता है। यदि जीव ब्रह्म होता तो जीव में ईश्वर के गुण होने चाहिए। जैसे चीनी के ढेर से एक दाना चीनी का लें तो उसमें चीनी के गुण विद्यमान होते हैं।

परमात्मा सर्वज्ञ है, जीव अल्पज्ञ है। परमात्मा अनन्त ज्ञान–युक्त है, जीव अल्पज्ञानी है। परमात्मा सभी जीवों के नाम, स्थान एवं जन्मों को जानता है, जीव को अपने कर्मों का ही ज्ञान नहीं है। परमात्मा सर्वशक्तिमान एवं अनन्त सामर्थ्य–युक्त है, जीव ईश्वर प्रदत्त शक्तियों से कुछ कार्य कर सकता है। परमात्मा ने सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की है, जीव शरीर में आकर ईश्वर–प्रदत्त शक्तियों से छोटे–छोटे कार्य करता है। जीव का आशावादी होना भी जीव की ब्रह्म से पृथक् सत्ता को प्रमाणित करता है क्योंकि जीव अपूर्ण है, उसे जो भी चाहिए वह ईश्वर के द्वारा उसकी व्यवस्था से ही मिल सकेगा। स्पष्ट है कि जीव ब्रह्म का अंश नहीं है। इसके अलावा ईश्वर आनन्दस्वरूप है, जीव आनन्द पाना चाहता है। ईश्वर अनन्त एवं विभु है, जीव एकदेशीय एवं अणु मात्र है।

जीवों के कल्याण के लिए ईश्वर ने सम्पूर्ण जड़–जगत् को भी नियमों में बाँधा हुआ है। वैज्ञानिक लोग इन्हीं ईश्वरीय नियमों की खोज में दिन–रात लगे रहते हैं, किन्तु बड़े–बड़े वैज्ञानिक लोग भी ईश्वर की व्यवस्था के आगे बिल्कुल बौने दिखाई देते हैं। अमरीका जो आज स्वयं को विश्व की सबसे बड़ी ताकत समझता है उस पर जब ईश्वरीय व्यवस्था से सर्दी, गर्मी या वर्षा का प्रकोप होता है तो ईश्वरीय शक्ति के आगे उसकी शक्ति शून्य प्रतीत होती है। प्रकृति जड़ है पूर्णरूपेण परतन्त्र है। जीव कर्म करने में एक सीमा तक स्वतन्त्र है तथा फल पाना ईश्वर की व्यवस्था के आधीन है।

त्रैतवाद को न मानकर अद्वैतवाद या भौतिकवाद को मानने से समाज को बहुत क्षति हुई है। जो लोग केवल ब्रह्म को सत्य तथा जगत् को मिथ्या कहते हैं उनको मालूम होना चाहिए कि जब ब्रह्म सत्य है तो ये सृष्टि जो कि उस ब्रह्म की रचना है वह मिथ्या कैसे हो सकती है। वैदिक दर्शन ये कहता है कि ये संसार मिथ्या नहीं है, यहाँ कुछ भी निरर्थक नहीं है। प्रत्येक वस्तु का कुछ न कुछ प्रयोजन अवश्य है। **'ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या'** के सिद्धान्त को मानने से अनेक लोग संसार से पलायन करके केवल ब्रह्मवादी हो गए। परमपिता परमात्मा ने मनुष्य को पिछले कर्मों का फल देने के लिए एवं नये परोपकार आदि उत्तम कर्म करने के लिए इस संसार में भेजा है अत: इस संसार को मिथ्या मानकर इससे पलायन करने से मुक्ति का मार्ग

सम्भव नहीं है।

इस संसार में दूसरी तरफ बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो न ईश्वर को मानते हैं न जीव को। भौतिक वैज्ञानिक न्यूटन के जड़त्व के निम्नांकित सिद्धान्त को ध्यान से पढ़ें।

जड़त्व का नियम ''इस प्रकृति में जो वस्तु स्थिर है, स्थिर ही रहेगी तथा जो गतिशील है, वह गतिशील ही रहेगी, जब तक उस पर बाह्य बल न लगाया जाए।'' अब प्रश्न है कि ये बाह्य बल कौन लगाता है या कौन लगाएगा? बाह्य बल लगाने वाली दो ही चेतन सत्ताएँ है-एक ईश्वर, दूसरा जीव। इस ब्रह्माण्ड में प्रत्येक वस्तु गतिमान है अर्थात् पृथ्वी, चन्द्र तारे आदि सभी गतिमान हैं।

सूर्य, चन्द्रमा, तारे, अनेक आकाश गंगाएँ जो कि आकाश में विशेष मानयुक्त घूमती हैं, जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं। इनको व्यवस्था में रखकर जो शक्ति भ्रमण कराती है वही ईश्वर है। इसी प्रकार दूसरी चेतन सत्ता जीव शरीर में आने के बाद ईश्वर-प्रदत्त शक्तियों से छोटे-छोटे कार्य करने में समर्थ होता है। इस सृष्टि की विचित्र रचना ही उस परमसत्ता का स्पष्ट प्रमाण है। यदि संसार में भौतिकवादियों के अनुसार सब कुछ अपने आप होता है तो बीज वृक्ष बनने के बाद वहीं क्यों रूक जाता है। वृक्ष से मेज, कुर्सी एवं अन्य फर्नीचर अपने आप क्यों नहीं बनते? जबकि वृक्ष की लकड़ी से मेज बनना बीज से वृक्ष बनने की अपेक्षा अधिक सरल है। यहाँ बीज से वृक्ष बनना ईश्वरीय सत्ता को प्रमाणित करता है तथा लकड़ी से मेज बनाने वाली दूसरी चेतन सत्ता जीव है। अतः स्पष्ट है कि तीन पदार्थ नित्य है-ईश्वर, जीव एवं प्रकृति, इसीलिए स्वामी सत्यप्रकाश जी ने कहा था-

''ईश्वर-जीव-प्रकृति यदि जाना, कुछ भी ज्ञेय नहीं फिर शेष।
तीन भाँति का ज्ञान अनोखा, प्रभु का है ये ज्ञान अशेष।।''

विशेष सूचना

परोपकारी-पत्रिका के सभी पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि डॉ. धर्मवीर जी से सम्बन्धित कोई पत्र, चित्र, ऑडियो, वीडियो आदि आपके पास हों तो कृपया हमें सूचित करें।

डॉ. धर्मवीर जी के जीवन पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिए जिन भी महानुभावों के पास उनसे सम्बन्धित कोई भी संस्मरण, विचार या कविता आदि हों, वे भी अतिशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें, ताकि आपके लेख स्मारिका में प्रकाशित किये जा सकें।

सम्पर्क सूत्र- ०९४६०४२११८३, ०१४५-२४६०१६४

ई-मेल-psabhaa@gmail.com

परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर-३०५००१ (राज.)

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं, वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है। **- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१**

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन-चरित्र प्रचार-प्रसार की भव्य योजना

विचार किसी भी देश, समाज व जाति की अमूल्य निधि (सम्पत्ति) है। जिसके पास में श्रेष्ठ विचार नहीं या फिर विचार को फैलाने के साधन नहीं हैं या फिर जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र अपने विचारों की अवहेलना करते रहते हैं, उनका अस्तित्त्व भी एक दिन समाप्तप्राय: हो जाता है। आज हर सम्प्रदाय, समाज, समूह व देश अपने विचारों का प्रचार-प्रसार बड़ी प्रबलता से हर क्षेत्र में व हर साधन से कर रहा है, लेकिन काफी समय से आर्यसमाज में वैचारिक शिथिलता देखी जा रही है। इस शिथिलता को दूर करने का मात्र एक ही उपाय है कि हम सभी आर्यजन ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत **अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का प्रचार नये शिक्षित लोगों में करें।** इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर सभा के माध्यम से विश्व पुस्तक मेला दिल्ली में वर्ष २०१४ से लगातार इन ग्रन्थों का नि:शुल्क वितरण किया जा रहा है।

सत्यार्थप्रकाश ही क्यों?-१. यदि कोई व्यक्ति, समाज, समूह, संस्था या राष्ट्र एक ग्रन्थ (पुस्तक) पढ़कर विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो यह सत्यार्थप्रकाश से ही सम्भव है। **२.** आज के दूषित वातावरण में वैदिक वाङ्मय को ठीक-ठीक जानने हेतु, पढ़ने-पढ़ाने हेतु प्रथम सत्यार्थप्रकाश और महर्षि के अन्य ग्रन्थों को पढ़ना-जानना अत्यन्त आवश्यक है। **३.** दर्शनशास्त्र, इतिहास, भारतीय-परम्परा, कर्त्तव्य, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य तथा मानवता आदि क्या हैं? - यह सारी जानकारी सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होती है। **४.** पाखण्ड, कुरीतियों व बुराइयों का नाश भी सत्यार्थप्रकाश से सम्भव है। **५.** सत्यार्थप्रकाश व ऋषि के अन्य ग्रन्थों की उपस्थिति में कोई विधर्मी अपनी शेखी नहीं मार सकता तथा किसी भी हिन्दू को बहकाकर विधर्मी नहीं बना सकता। **६.** सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव ने न जाने कितनों का जीवन ही बदल डाला। सत्यार्थप्रकाश के जोड़ की दूसरी पुस्तक दुर्लभ है, जिसमें ज्ञान का अमूल्य खजाना भरा पड़ा है। इसलिए इसका प्रचार-प्रसार अनिवार्य है। **योजना का विवरण निम्न प्रकार का होगा-१. सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी में)** आकार लगभग ६०० पृष्ठ व साइज डिमाई आकार में होगा। लागत मूल्य १००/- रुपये प्रति पुस्तक। **२. ऋषि जीवन चरित्र (हिन्दी में)** लगभग १६४ पृष्ठ व साईज डिमाई आकार में। लागत मूल्य ६०/- रुपये प्रति पुस्तक। **३. महर्षि द्वारा रचित पुस्तक आर्याभिविनय (हिन्दी में)** ६४ पृष्ठ व साइज डिमाई आकार में, लागत मूल्य ३०/- रु. प्रति पुस्तक।

नोट-यह साहित्य वैचारिक क्रान्ति के लिए व वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए गैर आर्यसमाजी सज्जनों व संस्थानों आदि को नि:शुल्क या अल्प मूल्य में वितरित किया जायेगा। साहित्य का ठीक-ठीक उपयोग हो व योग्य, शिक्षित, विचारवान् व्यक्तियों तथा संस्थानों तक पहुँचे इसके लिए वितरण व्यवस्था की जाएगी। योग्य प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का चयन कर कार्य में नियुक्त किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति, संस्था आदि से एक फार्म भरवाया जायेगा, जिसमें उनका पूर्ण पता, सम्पर्क आदि हो, जिससे भविष्य में परिणाम का मूल्यांकन किया जा सके। ग्रन्थों की प्रामाणिकता, शुद्धता व साज-सज्जा तथा सुन्दरता का विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस प्रचार-प्रसार योजना का उद्देश्य सत्यार्थप्रकाश व महर्षि के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार के माध्यम से मानव मात्र का कल्याण करना है। यह प्रचार-प्रसार मुख्य रूप से शिक्षित गैर आर्यसमाजी लोगों के लिए होगा। यह कार्य पूर्णरूप से महर्षि के मन्तव्यों के अनुरूप हो इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस कार्य की सफलता के लिए सभी आर्यजनों से, समाजों से व संस्थानों से निवेदन है कि इस महान् कार्य में तन-मन-धन से अपना सहयोग करने व अपने इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें।

नोट-अपना आर्थिक सहयोग आप परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम प्रेषित करते समय **सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार शीर्षक** अवश्य लिखें। धन प्रेषित करने हेतु आप चैक, ड्राफ्ट व सीधे राशि सभा के बैंक खाते में जमा करवाकर जमा पर्ची की प्रतिलिपि प्रेषित कर देवें या फिर ईमेल, दूरभाष द्वारा सूचित कर सकते हैं। धन्यवाद।

खाता धारक का नाम-**परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

नोट : इस योजना हेतु दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

सम्पर्क : मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

जीव अमर है तो हत्या अथवा आत्महत्या पाप या अपराध क्यों?

इन्द्रजित् देव

जीवन क्या है? शरीर व आत्मा का संयुक्त होना तथा एक साथ रहना। मृत्यु क्या है? शरीर व आत्मा का पृथक् होना, वियोग होना। वियोग निम्नलिखित तीन प्रकार में से किसी एक प्रकार से होता है:-

१. मृत्यु-बीमारी, जरावस्था अथवा दुर्घटना आदि के कारण शरीरान्त हेाता है तो उसे मृत्यु के नाम से अभिहित किया जाता है।

२. हत्या-जब किसी व्यक्ति का शरीरान्त कोई एक या अधिक व्यक्ति किसी घातक साधन से करते हैं तो वह हत्या कहलाता है।

३. आत्महत्या-जब कोई व्यक्ति दु:ख, अवसाद, निराशा या असफलता की दशा में किसी साधन या क्रिया द्वारा अपना शरीरान्त स्वयं कर लेता है तो इसे आत्महत्या कहा जाता है।

किसी भी प्रकार से हो, शरीर व आत्मा का पृथक् होना कभी-न-कभी अनिवार्य है। उपर्युक्त प्रथम प्रकार का शरीर एवं आत्मा का वियोग या पृथक् होना अपराध या पाप नहीं माना जाता, माना भी नहीं जाना चाहिए। स्वाभाविक मृत्यु होने पर थाने में रपट नहीं लिखाई जाती, क्योंकि स्वाभाविक मृत्यु में किसी का दोष नहीं है, परन्तु हत्या एवं आत्महत्या करने पर अपराध माना जाता है। हत्या करने वाले व्यक्ति के विरुद्ध तुरन्त थाने में मामला दर्ज किया जाता है। तब अपराधी को न्यायालय में प्रस्तुत किया जाता है तथा यथासम्भव शीघ्र न्यायाधीश निर्णय देकर अपराधी को उचित दण्ड देता है। आत्महत्या करने का यत्न करने वाले व्यक्ति को यदि अपने उद्देश्य में सफलता मिल जाती है अर्थात् वह शरीर का त्याग करके चला जाता है तो मुकद्दमा बनता है, परन्तु किसके विरुद्ध दायर किया जाए? जिसने आत्महत्या की, उसने अपराध व पाप तो किया, परन्तु मुकद्दमा किसके विरुद्ध किया जाए? आत्महत्या करने वाला तो चला गया। उसके विरुद्ध कार्यवाही नहीं हो सकती। हत्या वाले मामले में स्थिति दूसरी होती है। जिसकी हत्या की गई है, वह तो निर्दोष था तथा अब रहा नहीं, परन्तु जिसने हत्या की, वह जीवित है। उस पर हत्या करने का अभियोग चलाया जाता है क्योंकि ऐसा करना पाप तो है ही, अपराध भी है।

पाप तथा अपराध में भारी भेद है। एक ही कार्य के दो नाम हैं। राजनैतिक संविधान के अनुसार जो कार्य ग़लत है, वह अपराध है, परन्तु ईश्वरीय न्यायानुसार जो कार्य ग़लत है, उसे पाप कहा जाता है। हत्या अथवा आत्महत्या, ये दोनों राजनैतिक संविधानानुसार तथा ईश्वरीय व्यवस्थानुसार गलत कार्य हैं। अत: इन दोनों कार्यों के लिए हमने अपराध तथा पाप, इन दो शब्दों का प्रयोग किया है।

इस विषय में आगे विचार करने हेतु मुझे यह आवश्यक प्रतीत होता है कि आत्मा पर भी कुछ विचार किया जाए, क्योंकि किसी भी प्रकार से शरीरान्त हो, आत्मा का अन्त नहीं होता। न वह जलती है, न वह कटती है, न ही मरती है। हाँ, शरीरान्त अर्थात् मृत्यु होने पर आत्मा को नया शरीर मिल जाता है।

आत्मा के विषय में ऋग्वेद (१०/४८/५) में कहा है- **''अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन''** अर्थात् मैं आत्मा हूँ, मैं ऐश्वर्यवान् हूँ। मैं कभी भी मृत्यु को प्राप्त नहीं होता अर्थात् मृत्यु मुझे मार नहीं सकती। मेरे धन को कोई चुरा नहीं सकता। आत्मा का धन क्या है? कर्मेन्द्रियाँ, ज्ञानेन्द्रियाँ, शरीर के अन्य अवयव, मन व बुद्धि आदि। यह धन आत्मा को बार-बार नए-नए शरीरों के माध्यम से पूर्वकृत कर्मानुसार मिलता रहता है, जब तक आत्मा को मोक्ष प्राप्त नहीं होता। इस धन पर प्रत्येक आत्मा का ईश्वरीय आरक्षण है। आत्मा मृत्यु को चुनौती देते हुए कहती है-ओ मृत्यु! तू आई है, परन्तु याद रख!! तू मेरा कुछ भी नहीं छीन सकती। एक जन्म के स्थूल शरीर को मुझसे पृथक् कर सकती है। मुझे मार नहीं सकती। अधिकतम तू मेरा यह भौतिक शरीर नष्ट कर सकती है। मैंने पहले भी अनेक शरीरों का भोग किया है व आगामी जन्मों में भी करूँगी ही।

यजुर्वेद के ४० अध्याय में आत्मा व शरीर के विषय में स्वीकारा है- **वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्** अर्थात् आत्मा अमर है। अमृत जो मरती नहीं, परन्तु शरीर

अमर नहीं। इसका अंजाम, इसका परिणाम भस्म होने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। योगेश्वर कृष्ण ने इसी बात को गीता (२/२३) में कहा है-

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।

अर्थात् आत्मा को शस्त्रों से काटा नहीं जा सकता, अग्नि से जलाया नहीं जा सकता। जल इसे गला नहीं सकता तथा वायु इसे सुखा नहीं सकती। इस संक्षिप्त विश्लेषण व वैदिक प्रमाणों से स्पष्ट है कि आत्मा अवध्य है, अहननीय है, अमृत है, शाश्वत है। इस आधार पर स्वाभाविक प्रश्न उत्पन्न होता है कि हत्या या आत्महत्या करने वाले व्यक्ति को हेय, घृणा व उपेक्षा की दृष्टि से क्यों देखा जाता है? उसे अपराधी व पापी क्यों माना जाता है?

इस सम्बन्ध में शरीर एवं आत्मा के पारस्परिक सम्बन्ध को भी समझना आवश्यक है। आत्मा शरीर बिना निष्क्रिय है तथा कर्मों का फल भोगने में असमर्थ है। कार्य करने का साधन आत्मा को शरीर मिलता है-**शरीरमाद्यंखलु धर्मसाधनम्।** शरीर आत्मा को पिछले जन्मों के कर्मों का फल भोगने व नये कर्म करने के लिए साधनरूप में ईश्वरीय न्याय व कर्मफल व्यवस्था से मिलता है। **भोगापवर्गार्थम् दृश्यम् अर्थात् यह संसार (=मनुष्य शरीर) भोग व अपवर्ग के लिए ही है।** कर्म का कर्त्ता आत्मा व साधन रूप में शरीर है। आत्मा इतना अंकिचन व बेचारा है कि शरीर बिना अपने अस्तित्व का भान भी नहीं कर सकता। शरीर पाकर ही वह इच्छा, प्रयत्न, द्वेष, सुख-दुःख व ज्ञान का आभास करता है। जो 'न्याय दर्शन' में आत्मा के छः लक्षण अभिहित किए गए हैं। महर्षि गौतम ने इस दर्शन में कहा है-''**तदभावः सात्मक प्रदाहेऽपि तन्नित्यत्वात्।**'' अर्थात् आत्मा नित्य है। उसका वध नहीं किया जा सकता। अपितु उसके कार्य-साधनों का नाश होता है। अतः पाप है-''**न कार्याश्रयकर्तृवधात्**'' अर्थात् आत्मा के भोग आदि के साधन देहादि संघात का वध हिंसारूप पातक है। शरीर बिना आत्मा साधनहीन हो जाता है। शरीर ईश्वर प्रदत्त है। ईश्वरीय न्याय-व्यवस्था में बाधा डालना पाप है। एक पिता अपने पुत्र को बाजार में भेजता है। उसे थैला थमाकर पिता कहता है-बाजार में जाओ। घूमो, फिरो व बाजार को देखो। जो वस्तु तुम्हें पसन्द आए व तुम्हें आवश्यक प्रतीत हो, वह वस्तु लेकर आओ। पुत्र बाजार में गया। घूमता-फिरता थोड़ा समय पुत्र बाज़ार को देखता रहा। तभी एक लुटेरा आकर उसका थैला छीनकर या चीर-फाड़ करके भाग गया। बताइए, यह अपराध माना जाएगा या नहीं? शरीर आत्मा का घर है। किसी के घर को तोड़ना पुण्य है क्या? कृष्ण जी ने गीता में शरीर को आत्मा का वस्त्र कहा है। किसी के वस्त्र फाड़ने वाले को अपराधी माना ही जाएगा। यही सामाजिक व राष्ट्रीय व्यवहार में होता है।

इस निबन्ध के प्रारम्भ में वर्णित स्वाभाविक मृत्यु होने पर शरीर के अवयव अर्थात् कार्य करने व फल भोगने के साधन निष्क्रिय व व्यर्थ हो जाते हैं। तब मृत शरीर को चिता में रखकर जला देते हैं। मृत देह को नष्ट कर देते हैं। तब यह कार्य पाप या अपराध क्यों नहीं माना जाता? यह गम्भीर रोचक तथा चिन्तनीय प्रश्न है। इसका सीधा-सा उत्तर यह है कि जिस आत्मा के लिए शरीर बना था, वह आत्मा शरीर को ईश्वरीय-व्यवस्था से त्याग कर चला गया है। उसे लौटकर मृत शरीर में आना नहीं। जो बचा पड़ा है, मृत शरीर उसका परिणाम/अंजाम भस्म होना है-**भस्मान्तं शरीरम्** (यजुर्वेद ४०/१५) अतः मृत शरीर को अग्नि की भेंट चढ़ा देना कर्त्तव्य है अन्यथा दुर्गन्ध फैलेगी। न्यायदर्शनकार महर्षि गौतम ने भी इस बात की पुष्टि की है-''**शरीरदाहे पातकाभावात्।**'' अब हम कुछ चर्चा राजनैतिक संविधानानुसार हत्या तथा आत्महत्या की करते हैं। इस दृष्टि से किसी की हत्या करना और स्वयं अपनी हत्या करना अपराध है क्योंकि व्यक्ति को खिलाने, पिलाने, पढ़ाने, सिखाने व अन्य प्रकार से योग्य, सक्षम व समर्थ बनाने पर राष्ट्र के साधन, राष्ट्र का धन व्यय होता है। राष्ट्र का ज्ञान, विज्ञान, अन्न व जलादि व्यक्ति के शारीरिक, बौद्धिक व मानसिक निर्माण में खर्च होते हैं। प्रत्येक नागरिक स्वयं में राष्ट्र की सम्पत्ति है। प्रत्येक नागरिक राष्ट्र का ऋणी है। राष्ट्र का उस पर अधिकार है। उसकी मनीषा, क्षमता, योग्यता के विकास में राष्ट्र के योगदान को सदैव स्मरण रखना चाहिए। यदि वह आत्महत्या करता है तो यह घोर अपराध है। वह राष्ट्र का ऋण चुकाए बिना चला गया तो ऋण कौन चुकाएगा?

इसी प्रकार एक व्यक्ति आत्महत्या करके राष्ट्र की सम्पत्ति को नष्ट करने का दण्डनीय अपराध ही करता है।

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३४ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक २७, २८, २९ अक्टूबर २०१७, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्गदर्शन देता रहता है, जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है- महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३४वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ- 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन २९ अक्टूबर को प्रातः १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा **श्री सत्यानन्द वेदवागीश** होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान अजमेर की यज्ञशाला में सम्पन्न होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त।** जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १५ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। २७, २८, २९ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। २७ अक्टूबर को परीक्षा एवं २८ अक्टूबर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १५ अक्टूबर, २०१७ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तद्नुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३४वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्- प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु-अबोहर,आचार्य विजयपाल-झज्जर, श्री सोमपाल शास्त्री- भूतपूर्व केन्द्रीय कृषि मन्त्री, स्वामी ऋतस्पति-होशंगाबाद, डॉ. ब्रह्ममुनि-महाराष्ट्र, डॉ. वेदपाल-बड़ौत, आचार्या सूर्या देवी- शिवगंज, डॉ. विक्रम कुमार 'विवेकी'-चण्डीगढ़, डॉ. रमेशचन्द्र 'जीवन'- चण्डीगढ़, डॉ. वीरेन्द्र अलंकार-चण्डीगढ़, डॉ. ज्ञानप्रकाश-काँगड़ी, डॉ. रूपकिशोर-काँगड़ी, डॉ. सोमदेव 'शतांशु'-काँगड़ी, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार-कुरुक्षेत्र, डॉ. कृ ष्णपाल सिंह-जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य- दिल्ली, श्री जगदीश शर्मा-जयपुर, श्री शिवकुमार चौधरी-इन्दौर, श्री जयदेव आर्य-राजकोट, श्री ठा. विक्रमसिंह-दिल्ली, डॉ. उदयन- तेलंगाना, श्री प्रकाश आर्य-महू, श्री सत्यपाल पथिक, प. भूपेन्द्र सिंह आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	डॉ. सुरेन्द्र कुमार	ओम मुनि
संरक्षक	कार्यकारी प्रधान	मन्त्री

गुरुकुल काँगड़ी

तपेन्द्र वेदालंकार- आई.ए.एस. (रिटायर्ड)

मेरे पिता जी स्वयं तो सिद्धान्तों के पक्के थे ही, अन्यों को भी सिद्धान्तों पर चलाना चाहते थे। प्रतिदिन यज्ञ प्रार्थना के बाद 'हम आर्य करें जगती भर को' से पूर्व वे 'हम आर्य करें निज जीवन को', 'हम आर्य करें अपने घर को' अवश्य बोला करते थे। सम्भवत: इसी भावना के कारण उन्होंने मुझे गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में पढ़ने भेजा। रोजी-रोटी की चिन्ता को देखते हुए समय के प्रचलन के अनुसार मुझे आधुनिक विषय पढ़ने चाहिये थे परन्तु उन्होंने मुझे वेदालंकार हेतु प्रोत्साहित किया।

कनखल रोड के पुल से जब गुरुकुल काँगड़ी की ओर प्रवेश किया तो विशाल सिंह द्वार स्वागत कर रहा था। पक्की सड़क गुरुकुल तक थी, जो आगे ज्वालापुर जाती थी परन्तु आवाजाही ज्यादा नहीं थी। कुछ दूर आगे श्रद्धानन्द द्वार से गुरुकुल में प्रवेश किया- प्रकृति का सुरम्य वातावरण, बड़े-बड़े पेड़, आम का बाग, हरी घास, तरह-तरह की वनस्पति, खुला-खुला स्थान, तन-मन को मोह रहा था। मन में बसी पूर्व गुरुकुल की छवि से यह सौन्दर्य अलग था, अनुपम था, विराट था। छोटे विद्यालय के छात्रावास का भवन छोटे किले की तरह लगा था। वेद मन्दिर को देख शुक्रताल के मन्दिर फीके लग रहे थे, पुस्तकालय का भवन इतना बड़ा भी हो सकता है- यह अनुमान नहीं था। भव्यता की तो कल्पना ही नहीं की थी। बड़े परिवार की खुली-खुली जमीन- चारों ओर आवासीय भवन- वहाँ खड़े होकर यह प्रतीति ही नहीं हो रही थी कि किसी आवासीय परिसर में हैं। पूरे गुरुकुल का वातावरण एक अद्‌भुत शान्ति समेटे हुए था, जो नव मन को अपनी ओर खींच लिए जा रहा था। गुरुकुल आकर उत्सुकता निश्चिन्तता में बदल गयी थी, गुरुकुल के प्रति श्रद्धा निष्ठा में परिवर्तित हो गयी थी।

तपोनिष्ठ आचार्य रामनाथ वेदालंकार के चरणों में कई वर्षों तक बैठकर पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस उपलब्धि के सामने अन्य गुरुकुलीय उपलब्धियाँ तुच्छ थीं। ऐसा अध्यापक पूरे जीवन काल में दूसरा देखने को नहीं मिला।

पं. रामप्रसाद वेदालंकार तब तक विवाहित नहीं थे, कटिवस्त्र बांधते थे, नखूनी गले का कुर्त्ता पहनते थे। उन्होंने वेद पढ़ाया। हल्की मुस्कान उनके चेहरे पर सदा रहती थी। पं. जयदेव वेदालंकार दर्शन पढ़ाते थे, सांसारिक उदाहरण देकर पढ़ाते थे, जिससे दर्शन जैसा विषय भी ज्यादा कठिन नहीं लगता था। दर्शनों में यदि कुछ रुचि रही तथा दार्शनिक सिद्धान्तों को व्यवहार में जीने का यदि कुछ प्रयास किया, उसके बीजारोपण का श्रेय पण्डित जयदेव वेदालंकार को जाता है। पं. वेदप्रकाश जी शास्त्री संस्कृत साहित्य पढ़ाते थे, संस्कृत बहुत अच्छी बोलते थे- लच्छेदार, अलंकार से युक्त, सुन्दर वाक्य विन्यास। पं. बुद्धदेव विद्यालंकार संस्कृत साहित्य व अंग्रेजी दोनों में पारंगत थे। आधुनिक ढंग से पढ़ाते थे, वेशभूषा भी आधुनिक थी। पं. निगम शर्मा संस्कृत के उच्च कोटि के विद्वान् थे, सरल व्यक्तित्व के धनी थे, भारतीय वेशभूषा धारण करते थे। वेदालंकार में अंग्रेजी अनिवार्य विषय होता था। डॉ. राधेलाल वार्ष्णेय अंग्रेजी पढ़ाते थे। उच्च शैक्षणिक योग्यता होते हुए भी वे महीनों एडवांस कोर्स करने हैदराबाद जाते रहते थे।

मैं यह तो नहीं कहता कि गंगापार की कुलभूमि जैसा अध्ययन व चरित्र निर्माण के अवसर गुरुकुल काँगड़ी में उस समय उपलब्ध थे परन्तु यह गर्वपूर्वक कह सकता हूँ कि वैदिक धर्म के ध्वजवाहक गुरुजनों के साथ-साथ उस समय के उद्‌भट विद्वानों- पं. प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति, पं. धर्मदेव विद्यामार्तण्ड आदि का मार्गदर्शन छात्रों को प्राप्त था। श्री रघुवीरसिंह शास्त्री, कुलपति स्वयं ही धाराप्रवाह संस्कृत में भाषण करते थे। अन्य विश्वविद्यालयों से दर्शन, वेद, साहित्य आदि विषयों के विद्वान् आते रहते थे। गोष्ठियाँ, व्याख्यान होते रहते थे। पढ़ने-पढ़ाने का वातावरण गुरुकुल में था। गुरुकुल से निकलने वाले स्नातकों की छवि अन्य विश्वविद्यालयों में अच्छी बनी हुई थी।

मेरा लक्ष्य भारतीय प्रशासनिक सेवा था, जिसके लिए दिल्ली में सुविधाएँ ज्यादा थीं, अत: मैं भी प्रवेश के लिए दिल्ली गया। वापस आया तो आचार्य रामनाथ जी ने कहा- हम छात्रों पर परिश्रम करते हैं, वे दिल्ली या अन्य विश्वविद्यालयों में चले

जाते हैं, तुम मत जाना। मैंने १९७४ में वेदालंकार करने के बाद १९७६ में एम.ए. किया तथा तदुपरान्त पीएच.डी. हेतु काँगड़ी में ही पंजीकरण कराया।

वेद महाविद्यालय में तो कम से कम मूल स्त्रोत वेद की महत्ता उस समय मानी जाती थी। विद्यालंकार हो या वेदालंकार- वेदों के कुछ भाग का अध्ययन जरूरी था- पाठ्यक्रम में था। वैदिक व संस्कृत साहित्य आदि अधिकांश परीक्षाओं का माध्यम संस्कृत था। गुरुकुल के शिक्षकों व विद्यार्थियों में पिता व सन्तान जैसा संबन्ध तो नहीं था परन्तु गुरुओं का सम्मान व विद्यार्थियों का हितचिन्तन लुप्त नहीं हुआ था। फीस के नाम पर भी नाममात्र राशि थी। अंग्रेजी भी वेद महाविद्यालय में स्नातक की दोनों परीक्षाओं में अनिवार्य थी। यद्यपि गुरुकुल कुलभूमि की तरह नगरों-गाँवों से दूर तो नहीं था, परन्तु गुरुकुल का वातावरण अपेक्षाकृत शान्त व कुछ हद तक नगरों के प्रभाव से कम प्रभावित था। इस प्रकार गुरुकुल की प्रथम नियमावली जो लाला रलाराम के आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान रहते हुए २६ दिसम्बर १९०० को साधारण सभा द्वारा स्वीकृत की गयी थी, उसके अधिकांश मुख्य बिन्दुओं की पालना यथासम्भव हो रही थी। हाँ, तत्समय की स्थितियों को देखते हुए परीक्षाएँ दिलाना प्रारम्भ हो गया था। राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने के लिए अलग से कोई व्यवस्था नहीं थी। जहाँ तक ध्यान आ रहा है महर्षि के ग्रन्थों का पठन-पाठन अलग से नहीं था। यज्ञ कराने व सीखने का चलन छात्रों में नहीं था। कुछ छात्र भारतीय वेशधारण करते थे, कुछ पाश्चात्य। परन्तु एक बात अवश्य थी- सभी वैदिक धर्म में आस्था रखते थे, संस्कृत से प्रेम करते थे, अंग्रेजी के प्रति उपेक्षा भाव था, देशोद्धार की भावना भी थी, गुरुकुल पद्धति के प्रति हीन भावना नहीं थी। ये चाहे इसलिए हो कि वैदिक धर्मी ही गुरुकुल में अपनी सन्तानों को भेजते थे तथा उन पर वैदिकता का प्रभाव होता था अथवा इसलिए हो कि गुरुकुल का वातावरण ही इन सभी तत्त्वों को अपने में व्याप्त किए हुए था तथा छात्र को ये अनयास सहजतया प्रभावित करते थे।

हम कुछ छात्र १९७३ में कुलभूमि गये। जंगल के बीच काँगड़ी ग्राम के निकट पुराने गुरुकुल पहुँचते ही एक उल्लास एवं कृतज्ञता मन में आयी। उल्लास इसलिए कि कुलभूमि के प्रथम बार दर्शन कर रहे थे, वहाँ अब तक इतने भवन शेष थे कि उनमें सैकड़ों छात्र विद्याध्ययन कर सकते थे। कृतज्ञता इसलिए कि जब सामान्य जन झोंपड़ियों में रहा करते थे, जब आने-पैसे में दिहाड़ी हुआ करती थी, जब लोगों को लम्बे समय तक रुपये के दर्शन ही नहीं नसीब होते थे- उस समय पुण्यात्मा महात्मा ने कितना श्रम किया होगा, इस विशाल सम्पत्ति को, गुरुकुल की इमारतों को खड़ा करने में। परन्तु उस समय उस बिल्डिंग में बकरियाँ विश्राम कर रहीं थीं, जगह-जगह गन्दगी पड़ी थी- लगता था कि लम्बे समय से किसी ने सम्भाला नहीं हो- बस उदासीनता का, क्षोभ का भाव आ गया जो उत्साह पर हावी हो गया। मन में आया कि हमारे पूर्वजों ने जो कुछ भवन, सम्पत्ति व विचार-सम्पदा छोड़ी है, हम उसका क्षेम भी क्यों नहीं कर पा रहे? इस बिन्दु को समझने के लिए पिछले इतिहास के पन्ने पलटने होंगे।

नवम्बर १८९८ को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने प्रस्ताव किया कि आठ हजार रुपये एकत्र हो जाने पर गुरुकुल की स्थापना का कार्य आरम्भ किया जावे। लाला मुंशीराम ने अगस्त १८९९ में इस निश्चय के साथ घर छोड़ दिया कि जब तक तीस हजार रुपये एकत्रित नहीं कर लेंगे, घर में पैर नहीं रखेंगे। अप्रैल १९०० को घर वापस आये तो ४० हजार से अधिक राशि एकत्र कर चुके थे। गुरुकुल का विरोध करने वालों का आज की भाँति उस समय भी एक तर्क यह था कि गुरुकुल में अपने पुत्रों को भेजेगा कौन? पर जब १९ मई १९०० में गुजराँवाला में गुरुकुल की स्थापना की गयी तो लाला मुंशीराम ने अपने पुत्रों-हरिश्चन्द्र व इन्द्रचन्द्र को गुरुकुल में प्रविष्ट कराया। लाला मुंशीराम सफल वकील थे, गुरुकुल की स्थापना की लगन लगी तो वकालत छोड़ दी। १९०२ में अपना पुस्तकालय गुरुकुल को दे दिया। १९०४ में सद्धर्म प्रचारक प्रैस गुरुकुल को दान कर दिया। जालन्धर की अपनी कोठी १९११ में गुरुकुल को दान कर दी, जिसको आर्य प्रतिनिधि सभा ने उस समय २० हजार रुपये में बेचा था। सब कुछ गुरुकुल को दान कर दिया, हाँ- एक चीज अपने पास ही रखी- वह था लाला मुंशीराम पर ३६०० रुपये का ऋण। उसे अपने पास रखा। लम्बे समय तक गुरुकुल में रहते संचालन करने- महात्मा मुंशीराम ने कोई पारिश्रमिक नहीं लिया।

महात्मा मुंशीराम के त्याग व तप का ही प्रभाव था कि

जब उन्होंने हरिद्वार के सामने, गंगा के पूर्वी तट पर काँगड़ी ग्राम में गुरुकुल स्थापित करना चाहा तो काँगड़ी गाँव के जमींदार नजीबाबाद जिला बिजनौर के मुंशी अमनसिंह जी ने १४०० बीघे जमीन गुरुकुल के लिए महात्मा के चरणों में अर्पित कर दी। मुंशी अमनसिंह जी यहीं नहीं रुके उन्होंने कुछ वर्ष पश्चात् ग्यारह हजार रुपये से अधिक की सम्पत्ति भी गुरुकुल को, नहीं-नहीं, महात्मा मुंशीराम को समर्पित की।

यह विवादित हो सकता है पर मानने योग्य नहीं है कि आर्यजन अपनी सन्तानों को गुरुकुल में नहीं भेजते। यदि विश्वसनीयता हो तो आज भी गुरुकुलों में प्रतीक्षा सूची बने। पुण्यात्मा महात्मा की विश्वसनीयता देखिये कि गुजराँवाला से २ मार्च १९०२ को लाला मुंशीराम, भण्डारी शालिग्राम हरिद्वार के रेलवे स्टेशन पर पहुँचे थे- १२ छात्र साथ में थे। एक माह बाद ही छात्रों की संख्या बढ़कर ४५ हो गयी थी। सन् १९१० के फरवरी मास में एक सौ तीस के लगभग छात्र गुरुकुल में प्रवेश के लिए आये थे, जिनमें से केवल २५ को प्रवेश दिया गया था। १९१२ में गुरुकुल में ३०० छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। लगभग ६०० छात्रों के निवास तथा अध्यापन कक्ष व कर्मचारियों के आवास की व्यवस्था हेतु पटियाला रियासत के चीफ इंजीनियर श्री गंगाराम से भवनों के मानचित्र बनवाये गये थे। १९०८ में पक्के भवन बनने प्रारम्भ हो गये थे।

हरिद्वार में प्लेग हो चुका था इसलिए गुरुकुल के उद्घाटन का उत्सव नहीं रखा गया था, उत्सव न होने की सूचना समाचार-पत्रों में दे दी गयी थी फिर भी १९०२ में ५०० आर्यजन गुरुकुल भूमि पहुँच गये थे। उस स्थिति में जब गुरुकुल तक कई मील पैदल रास्ता था, कोई साधन नहीं था, जंगल थे। १९०३ के वार्षिक उत्सव में चार हजार आर्यों की उपस्थिति थी। १९०४ के वार्षिक उत्सव में तो पचास हजार लोगों की उपस्थिति का उल्लेख गुरुकुल काँगड़ी के सौ वर्षों के इतिहास में है।

महात्मा मुंशीराम जी के दृढ़निश्चय, विश्वसनीयता, सर्वस्व त्यागभाव के कारण ही गुरुकुल खुलने प्रारम्भ हो गये थे, गुरुकुल सूपा, गुरुकुल झज्जर, गुरुकुल भटिण्डा की आधार-शिलाएँ तो स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा रखी गयीं थीं।

२८ सितम्बर १९२४ को गंगा में बाढ़ आयी तथा आधे से ज्यादा गुरुकुल के भवन बाढ़ में बह गये। गुरुकुल वर्तमान स्थान पर लाया गया तथा ६०० बीघा जमीन का क्रय कर के नये भवनों का निर्माण प्रारम्भ किया गया। महात्मा मुंशीराम पर गबन का आरोप किसने व क्यों लगाया? गुरुकुल की सैकड़ों बीघा जमीन क्यों व किसने बेची? ये बीती बातें प्रेरणा तो देती नहीं, अत: इनको छोड़ते हुए भविष्य को संवारने के लिए ही विचार करना समुचित है।

अब भी भारतीय समाज के समक्ष वे ही परिस्थितियाँ विद्यमान हैं, जिन्हें ध्यान में रखकर गुरुकुल की स्थापना की गयी थी। महर्षि दयानन्द जी महाराज द्वारा सत्यार्थप्रकाश में लिखी गयी शिक्षा-व्यवस्था अभी लागू नहीं है तथा हम आर्यजन महर्षि की व्यवस्था का प्रतिकार भी नहीं कर सकते। ऐसी स्थिति में गुरुकुल काँगड़ी को केन्द्र बनाकर-शीर्ष मानकर उसका उद्देश्यों के अनुकूल विकास होना चाहिये, जिससे अन्य गुरुकुलों की उससे सम्बद्धता हो तथा उपलब्ध गुरुकुलों की स्थिति में सुधार हो एवं कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के लिए अन्य गुरुकुल भी खुलें। जैसे १९३१ में गुरुकुल को अधिक सर्वप्रिय बनाने के साधनों की संस्तुति करने के लिए महात्मा नारायण स्वामी जी की अध्यक्षता में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने एक कमीशन नियुक्त किया था, उसी प्रकार आज भी प्रतिनिधि सभाओं को एक साथ बैठकर गुरुकुल की उन्नति के बिन्दुओं को चिह्नित करने की व उन पर कार्यवाही करने की आवश्यकता है। सत्कर्म के लिए न तो पैसे की कमी रहती है, न ही व्यक्तियों की। बस सत्यतापूर्वक ऋषि की पद्धति में विश्वास कर कार्य करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज जैसी विश्वनीयता स्थापित करने की देर है, आगे का कार्य तो आर्यजन स्वयमेव कर देंगे।

१२ अप्रैल १९१७ को महात्मा मुंशीराम जी ने संन्यास धारण करते समय श्रद्धा को ही अपने जीवन की आराध्या देवी कहा था, नाम भी स्वामी श्रद्धानन्द रखा था। उनके द्वारा प्रारम्भ की गयी गुरुकल पद्धति के प्रसार के लिए गुरुकुल काँगड़ी को केन्द्र बनाकर स्वामी जी महाराज को श्रद्धासुमन अर्पित करना हमारा कर्त्तव्य भी है तथा समाज की उन्नति के लिए अनिवार्य व अपरिहार्य भी है।

श्री चाँदकरण जी शारदा ने ऐसी छाप छोड़ी

ओममुनि

आर्य बन्धुओ! हमारे बड़े कैसे थे? उन्होंने वैदिक धर्म प्रचार के लिये क्या-क्या किया? उन्होंने अपने सम्पर्क में आने वालों पर कैसे अमिट और गहरी छाप छोड़ी? इन बातों पर हम यदा-कदा विचार करेंगे तो हमें एक विशेष ऊर्जा व प्रेरणा प्राप्त होगी। इसी प्रयोजन से आज मैं आपकी सेवा में एक अनूठा प्रसंग रखने लगा हूँ। इस प्रसंग का हमारी परोपकारिणी सभा से तथा अजमेर से सीधा सम्बन्ध है।

यह कोई पन्द्रह वर्ष पुरानी घटना है। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्रीमान् डॉ. ब्रह्ममुनि जी व डॉ. कुशलदेव जी ने श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी से वेद प्रचार सप्ताह के लिये एक मास का समय माँगते हुये लिखा कि आपके महाराष्ट्र निवास-काल के बहुत से प्रेमी आपको याद कर रहे हैं। आप हमें एक मास दें। आपका कुछ स्थानों पर कार्यक्रम बनाया है।

यह पत्र पाकर जिज्ञासु जी ने महाराष्ट्र सभा को समय दे दिया। आपकी वेद प्रचार यात्रा का पहला कार्यक्रम धुलेगाँव में रखा गया। जिज्ञासु जी महाराष्ट्र में कभी धुलेगाँव नहीं गये थे। आपने समझा कि कोई गाँव होगा, परन्तु धुलेगाँव तो महाराष्ट्र का एक बहुत बड़ा और प्रसिद्ध नगर है। डॉ. कुशलदेव जी ने वहाँ पहुँचने का मार्ग तो लिख दिया, परन्तु आर्यसमाज मन्दिर कहाँ है? यह लिखना वह भूल गये।

वहाँ जाते हुए गाड़ी के इञ्जन में कोई गड़बड़ हो गई। जिज्ञासु जी को वहाँ समय पर पहुँचना था। जैसे-तैसे बसें बदल-बदलकर प्रभात काल धुलेगाँव पहुँच गये। सूर्योदय से थोड़ा पहले जिज्ञासु जी ने समाज मन्दिर का अता-पता आरम्भ किया तो एक भी व्यक्ति वहाँ आर्यसमाज मन्दिर को नहीं जानता था।

वहाँ के आर्यसमाज के प्रधान को सारा नगर जानता था। उसका नाम कुशलदेव जी लिखना भूल गये। जल बिन मीन के सदृश धुलेगाँव पहुँचकर जिज्ञासु जी इस समस्या के कारण तड़पने लगे। तभी अकस्मात् एक सज्जन ने उन्हें कहा, ''यहाँ एक मन्दिर के राजस्थानी पुजारी से मैं आपको मिलवाता हूँ। वह आपको आर्यसमाज मन्दिर का पता अवश्य बता देगा। उसकी कुछ आर्य लोगों से पहचान है। वह भाई जिज्ञासु जी को उस राजस्थानी से मिलवाने के लिये मन्दिर ले गया। प्रातः साढ़े पाँच बजे का समय होगा।''

जिज्ञासु जी ने उसे प्रेमपूर्वक नमस्ते करके अपना परिचय देते हुये उसके सामने अपनी समस्या रखी। पण्डित जी ने अत्यन्त स्नेह से जिज्ञासु जी से कहा, ''आप पहले यहाँ स्नान कीजिये, चायपान प्रातराश करवाकर मैं आपको रिक्शा पर बिठा दूँगा। वह रिक्शावाला आपको समाज मन्दिर पहुँचा देगा।'' उस राजस्थानी भाई को जिज्ञासु जी ने धन्यवाद देते हुये कहा कि मैं वहीं जाकर स्नान आदि करूँगा। आप मेरे लिये इतना कष्ट न करें। बहुत कहा, परन्तु पण्डित जी ने जिज्ञासु जी की एक न सुनी। उनका वही अनुरोध था। मानो वर्षों का बिछड़ा भक्त मिल गया।

जिज्ञासु जी ने यह सारी कहानी श्री डॉ. धर्मवीर जी को, शारदा परिवार के कुछ सदस्यों को तथा मुझे भी सुनाई। जिज्ञासु जी को यह समझ नहीं आ रहा था कि इस पौराणिक सज्जन से मैं पहली बार मिल रहा हूँ। इस बन्धु की मेरे प्रति इतनी श्रद्धा-भक्ति का कारण क्या है? जब बार-बार जिज्ञासु जी ने अपना यह निवेदन दोहराया तो उस भाई के स्नेह सौजन्य व भक्तिभाव के कारण का पता चल गया।

उस वयोवृद्ध, परन्तु स्वस्थ राजस्थानी ने कहा, ''ऐसे तो आप यहाँ से जा नहीं सकते। आज आपको देखकर मुझे राजस्थान केसरी कुँवर चाँदकरण शारदा की याद आ रही है। मैंने उनके दर्शन अजमेर में भी कई बार किये। उनकी दहाड़-हुंकार सुनने का मुझे सौभाग्य प्राप्त रहा। जब उन्होंने आर्य सत्याग्रह हैदराबाद के लिये जत्था लेकर शोलापुर के लिये कूच किया तब मैं मध्य प्रदेश में था। प्रत्येक स्टेशन पर धर्म प्रेमियों की भारी भीड़ उमड़ कर उनके स्वागत को पहुँच जाती। हिन्दुओं के मन में तब आर्यसमाज ने अपार जाति-प्रेम का संचार कर दिया। ऐसे ही तब मैं भी उनके स्वागतार्थ स्टेशन पर पहुँच गया।

कुँवर चाँदकरण शारदा के उस संक्षिप्त भाषण व सन्देश को मैं आजीवन नहीं भूल पाऊँगा। आज आपको देखकर आर्यसमाज के उस नेता की, राजस्थान केसरी की याद मेरे मन को गुदगुदा रही है। आज आपके रूप में मैं अपने राजस्थान केसरी को देख रहा हूँ अतः आप स्नान कीजिये-जलपान करवाकर ही आपको विदा करूँगा।''

''उस राजस्थानी भाई के हृदय पर चाँदकरण जी के धर्मप्रेम, जाति-भक्ति और शूरता-वीरता के गहरे ठप्पे को देखकर मैं भी इतराने लगा। यह कहते हुये जिज्ञासु जी सुनाया करते हैं हमारे बड़े ऐसे थे।'' आओ हम उनसे कुछ सीखें उनके अनुसार बनकर समाज की शोभा बढ़ायें।

शङ्का - समाधान - ४

डॉ. वेदपाल

शङ्का- यजुर्वेद सामवेद आदि के मन्त्रों के ऊपर कुछ अक्षर लिखा हुआ मिलता है, उसका अर्थ जानना था। जैसा कि यजुर्वेद १-१ मन्त्र में-

(अ) **ईषे त्वोर्जेत्वा..... प्रजावतीरनमीवा.....** आदि में ईषे के ई के ऊपर 'क' तथा प्रजावती के प्र के ऊपर 'र' आदि अक्षर लिखने का क्या मायने होता है?

(आ) सामवेद के मन्त्र ५१ '**प्र दैवोदासो अग्निर्देव.....**' लिखा हुआ है उसका क्या अर्थ है?

(इ) अथर्ववेद १.२.२ के मन्त्र '**ज्याऽके परिणो.....**' में ऽ चिह्न का मतलब समझना था।

रुद्र शास्त्री, उदालगुरी, आसाम

समाधान-(अ) यजुर्वेदीय १.१ मन्त्रस्थ- ईषे त्वोर्जे...पदस्थ 'इषे' के 'इ' के ऊपर 'क' (ईषे) तथा प्रजावती: के 'प्र' के ऊपर 'र' (प्रजा.) अक्षर मन्त्र के छन्द को सूचित करने का संकेतक है। अर्थात्-'इषे त्वोर्जे.....भागं' पर्यन्त मन्त्र का अमुक छन्द (स्वराड् बृहती) है। 'प्रजावती:.....पाहि' तक अवशिष्ट मन्त्र का अमुक छन्द (ब्राह्मी-उष्णिक्) है। संहिता में मन्त्र के उक्त भाग के छन्द का संकेत देने के लिए 'क' तथा 'र' अक्षर प्रयुक्त किए गए हैं। इनके स्थान पर प फ आदि अथवा A, B आदि कोई भी अक्षर संकेत चिह्न के रूप में प्रयुक्त किए जा सकते हैं। शोध-पत्र तथा शोध-ग्रन्थों में इसी प्रकार किसी शब्द के ऊपर उसके सम्बन्ध में कोई विशेष सूचना/व्याख्या/सन्दर्भ आदि देने के लिए इस प्रकार के अक्षर (उस अक्षर के ऊपर-यथा राम[१]) चिह्न अथवा १,२ आदि संख्याएं सन्दर्भ की सूचना देने के लिए प्रयुक्त की जाती हैं। संहिता में भी छन्द की सूचना इन्हीं चिह्नों के साथ दी गई है। परोपकारिणी सभा से प्रकाशित संहिता को देखकर आप इसी प्रकार के संकेतक को जान सकते हैं। ये चिह्न मात्र संकेतक हैं। अन्य मन्त्रों में इनके द्वारा देवता, स्वर आदि का भी संकेत किया गया है। यह चिह्न मन्त्र का भाग नहीं है। निर्णय सागर संस्करण में इनका प्रयोग नहीं किया गया है।

(आ) वेद मन्त्रों के स्वर, सस्वर पाठ की सुगमता तथा अर्थ के विशेष परिज्ञान (यद्यपि भाष्यकार अर्थ करते हुए स्वर को विशेष महत्त्व देते रहे हों ऐसा कहना कठिन है।) के लिए कुछ चिह्न निर्धारित किए गए हैं। सामान्यत: इन्हें उदात्त, अनुदात्त, स्वरित कहा जाता है। इन्हीं उदात्त आदि की पहचान के लिए यह निर्धारण किया गया है। तद्यथा-उदात्त के लिए कोई चिह्न नहीं है। अनुदात्त के लिए अक्षर/स्वर के नीचे (-) यह चिह्न तथा स्वरित के लिए अक्षर के ऊपर (।) प्रदर्शित करते हैं। इससे सस्वर मन्त्रोच्चारण कर्त्ता को यह जानने में सुविधा होती है कि अमुक अक्षर का उच्चारण ताल्वादि के किस स्थान (उच्च, नीच अथवा सम-मध्यम स्थान) से करना चाहिए। ऋक्, यजु, तथा अथर्व में यह चिह्न इसी रूप में प्रदर्शित किए जा रहे हैं, किन्तु सामवेद में इनके स्थान पर संख्या १,२,३ उदात्त के लिए अक्षर के ऊपर '१' (एक), अनुदात्त के लिए अक्षर के ऊपर '३' (तीन) तथा स्वरित के लिए अक्षर के ऊपर '२' (दो) संख्या का उल्लेख किया जाता है। इनकी कतिपय अवस्थाओं/विशेषताओं के ज्ञापन के लिए संख्या के साथ 'उ', 'र', 'क' आदि का प्रयोग किया जाता है। वैसे यह चिह्न भी मन्त्र का भाग नहीं है। केवल स्वर परिज्ञान की सुगमता के लिए ही परम्परा से प्रचलित है।

(इ) अथर्व १.२.२ '**ज्या ऽके परि णो.....**' मन्त्रस्थ (ऽ) चिह्न भी साधारणत: अवग्रह चिह्न के रूप में जाना जाता है। यह चिह्न दो पदों के सन्धित रूप को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होता है। यहाँ भी 'ज्या' इस प्रातिपदक से ''कुत्सिते च' अष्टा. ५.३.७४ कुत्सित अर्थ में अथवा 'अज्ञाते' अष्टा. ५.३.७३ अज्ञात अर्थ में 'क' प्रत्यय होकर-कुत्सिता ज्या= ज्याका अथवा अज्ञाता ज्या= ज्याका। सम्बोधन में ज्या के रूप है। यहाँ विशेषण विशेष्य के भेद प्रदर्शनार्थ अवग्रह का चिह्न प्रयुक्त है। यह चिह्न भी संहिता का भाग नहीं है। इसलिए कुछ संस्करणों में उपलब्ध होता है कुछ में नहीं।

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एकमात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्णरूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोधकर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों में भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता
(०१ से १५ जून २०१७ तक)

१. श्री देवमुनि, अजमेर २. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ३. श्री गणपतलाल तापड़िया, कोटा ४. श्री वृद्धिचन्द गुप्त, जयपुर ५. श्री दिनेश नवाल व श्रीमती राजकुमारी नवाल, अजमेर ६. श्रीमती सरिता स्वामी, जयपुर ७. श्री राजाराम त्यागी, हरिद्वार ८. श्री श्रीराम वर्मा, ऊधमसिंह नगर ९. श्रीमती अम्बिका व वेदभानु त्यागी, गाजियाबाद १०. मै. स्वस्तिकाम: चैरिटेबिल ट्रस्ट, अमरावती ११. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली १२. श्री अवनीश कपूर, नई दिल्ली १३. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर १४. श्री प्रभुलाल कुमावत, किशनगढ़ १५. श्री ओमपाल सिंह राघव, अलीगढ़ १६. श्री संजय जाखड़ व श्रीमती चन्द्रकला, हनुमानगढ़ १७. श्री बालमुकुन्द नवाल, भीलवाड़ा १८. श्री रमेश मुनि व श्रीमती उषा आर्या, अजमेर १९. श्री गौतम कुमार पाल, गंगटोक २०. श्री विजय सिंह गहलोत व श्रीमती कंचन गहलोत २१. श्री सागर दत्तात्रेय, औरंगाबाद २२. मेहता माताजी, अजमेर २३. श्री सुनील अरविन्द नरखेड़े, जलगाँव २४. श्री परमानन्द पटेल, सोनभद्र २५. श्री राजेन्द्र सिंह, नई दिल्ली। –

परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गोभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता
(०१ से १५ जून २०१७ तक)

१. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर २. श्रीमती मिथिलेश चौहान, अजमेर ३. श्री वृद्धिचन्द गुप्त, जयपुर ४. श्री गणपतलाल तापड़िया, कोटा ५. श्री वीरेन्द्र कुमार गोस्वामी, दिल्ली ६. श्री ऋषभ गुप्ता, अम्बाला कैन्ट ७. श्रीमती तरुणा गहलोत, अजमेर ८. श्रीमती पुष्पलता उपाध्याय, अजमेर ९. श्रीमती चन्द्रावती व श्री सूरजमल मीणा, अजमेर १०. महिला मण्डल, गुलाबपुरा, अजमेर ११. श्री संजय तिवारी, दिल्ली १२. टीना गहलोत, गाजियाबाद १३. श्रीमती पद्मावती, गौतमबुद्ध नगर १४. डॉ. रमेश मुनि व श्रीमती उषा आर्या, अजमेर १५. श्री राजेन्द्र आर्य, बाड़मेर १६. श्री गौतम कुमार पाल, गंगटोक १७. श्री जयप्रकाश, भिवानी १८. श्री विजय सिंह गहलोत व श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर १९. श्री नारायण सोनी, बीकानेर २०. श्री छगनलाल कैलाश चन्द, अजमेर २१. श्री अशोक कुमार, सवाई माधोपुर २२. श्री शैलेन्द्र कुमार, मेरठ। **– परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

अन्न-संग्रह (दानदाता)

१. श्री बालमुकुन्द मोहनलाल छापरवाल, अजमेर २. श्री मुरलीधर मोहन लाल छापरवाल, अजमेर ३. श्रीमती शान्ति देवी, अमृतसर ४. श्री रतनलाल तापड़िया, अजमेर ५. श्री प्रभुदयाल कुमावत, किशनगढ़ ६. मै. ड्रीम मार्बल्स, किशनगढ़, ७. श्री ओमप्रकश ईनाणी, किशनगढ़, ८. श्री जगदीश तापड़िया, मदनगंज-किशनगढ़ ९. श्री रामनिवास, मदनगंज-किशनगढ़ १०. श्रीमती कृष्णा भाटिया, अजमेर ११. रामरतन छापरवाल, अजमेर १२. श्रीमती सरला माहेश्वरी, ब्यावर १३. श्रीमती सुशीला तँवर, अजमेर १४. श्री अमरचन्द कुमावत, किशनगढ़ १५. श्री हेमचन्द कुमावत, किशनगढ़ १६. मै. लक्ष्मी एन्टरप्राइजेज, किशनगढ़, अजमेर १७. श्री जितेन्द्र सिंह, किशनगढ़ १८. श्री रामपाल छीपा, मदनगंज-किशनगढ़ १९. श्री गिरधारीलाल अग्रवाल, मदनगंज-किशनगढ़ २०. श्री प्रकाश गंगवाल, मदनगंज-किशनगढ़ २१. श्री पुसराज देइदानका, अजमेर २२. मै. पी.के.डी. किशनगढ़, अजमेर २३. श्री सुशील कुमार शर्मा, किशनगढ़ २४. श्री कृष्ण सिंह राठी, ब्यावर।

संस्था - समाचार

प्रात:कालीन प्रवचन में **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि वेद मन्त्रों में ईश्वर की स्तुति, गुण, कर्म, स्वभावों का वर्णन है। जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव, स्वरूप को यथावत् जानकर उस पर विश्वास करता है उसको संसार में भय नहीं लगता।

रविवारीय प्रात:काल प्रवचन में प्रेम के विषय में जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान करते हुए **आचार्य जी** ने कहा कि प्रेम भावना और विचार दोनों से होता है। जैसे परमात्मा जीवों से नि:स्वार्थ प्रेम करता है, वैसे ही ईश्वरभक्त मनुष्य संसार में नि:स्वार्थ प्रेम करता है। अपने मान-अपमान, हानि-लाभ की चिन्ता किये बिना दूसरों के सुख की इच्छा करना शुद्ध प्रेम है। प्रेम से मनुष्य संवेदनशील और दयालु होता है।

प्रात:कालीन प्रवचन में **स्वामी मुक्तानन्द जी** ने कहा कि परमपिता परमात्मा के कृपा से हम सबको यह मनुष्य जीवन मिला है। मनुष्य जीवन को प्राप्त करके क्या करना चाहिये, क्या नहीं करना चाहिये, यह शास्त्रों में बताया गया है। इसलिये प्रत्येक मनुष्य को ऋषिकृत ग्रन्थों का गहन अध्ययन करना चाहिये। महर्षि मनु कहते हैं जैसे लकड़ी का हाथी और चमड़े का हिरण, वैसे ही स्वाध्याय न करने वाला ब्राह्मण नाममात्र होता है, उससे संसार का कोई उपकार नहीं होता।

प्रात:कालीन प्रवचन में **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि वेद में हमारे ज्ञानवर्धन के लिए अनेक विषय हैं। उनमें ईश्वर विषय मुख्य है। परमात्मा ने अपना स्वरूप वेदमन्त्रों के माध्यम से प्रकट किया है। वेद में जीवात्मा और त्रिगुणात्मक प्रकृति का भी वर्णन है। मनुष्य प्रकृति के तीनों गुणों से प्रभावित होकर संसार में कर्म करता है। तमोगुण और रजोगुण से सतोगुण श्रेष्ठ होता है।

उन्नति और अवनति दोनों में थोड़ा सा भेद है उत् और अव का। अवनति का अर्थ नीचे की ओर ले जाने वाला और उन्नति का अर्थ ऊपर की ओर ले जाने वाला। विवेकशील व्यक्ति अपने गुणों और विद्या की वृद्धि, धार्मिक मनुष्यों और विद्वानों से जुड़ने, ईश्वरभक्ति में अपनी उन्नति मानता है।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में **आचार्य कर्मवीर जी** ने कहा कि इन्द्रियों का संयम करना मनुष्यों का एक मुख्य आचरण है। महर्षि दयानन्द के अनुसार इन्द्रियों का संग अर्थात् विषय भोग करने से मनुष्य दोष को प्राप्त होता है।

हमारे वैदिक वाङ्मय, दर्शन आदि शास्त्रों का केवल एक ही उद्देश्य है, ज्ञान को प्राप्त करते हुए अविद्या और उससे प्राप्त होने वाले दु:खों से छूटना और सुख प्राप्त करना।

सायंकालीन प्रवचन में उपदेश मंजरी के अंतर्गत महर्षि दयानन्द द्वारा वर्णित इतिहास की चर्चा करते हुए **उपाचार्य सत्येन्द्र जी** ने कहा कि महाभारत युद्ध से लगभग एक हजार वर्ष पहले राजसभा, विद्यासभा और धर्मसभा का लोप होने के कारण अराजकता, अविद्या और अधर्म बढ़ गया था, इसीलिये महाभारत युद्ध हुआ।

प्रात:कालीन प्रवचन में **स्वामी सोमानन्द जी** ने कहा कि मानव जीवन प्रेम के आधार पर ही टिका हुआ है। हम प्रेम के आधार पर ही संतुष्ट रह पाते हैं। सांसारिक प्रेम से मनुष्य दु:खी हो सकता है लेकिन ईश्वर से प्रेम करने वाला सदा सुखी रहता है।

मोहन आश्रम, हरिद्वार से पधारे **स्वामी नित्यानन्द जी** ने बताया कि वे पिछले ३८ वर्ष से देश के अनेक नगरों में वैदिक मान्यताओं के प्रचार-प्रसार के लिए यात्राएँ कर रहे हैं। विशेष रूप से विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज और वेद से परिचित करवाते हैं। उन्होंने **विश्वानि देव सवितर्दुरितानि.....** मंत्र के भावार्थ पर गीत सुनाया- हे प्रभु दुर्गुण मेरे हर लीजिये...।

रविवारीय प्रात:कालीन सत्र में आर्य वीरांगना **पूजा रावत** ने प्रेरक गीत सुनाया-'तुम समय की रेत पर छोड़ते चलो निशां...'। **ब्र. रविशंकर जी** ने भी भजन प्रस्तुत किया- 'प्रभु तेरा ओम् नाम सबका सहारा है....'।

रविवारीय सायंकालीन प्रवचन में **ब्र. बालकृष्ण जी** ने कहा कि राम ईश्वर के अवतार नहीं थे। वे वेदों के विद्वान्, गुणवान् और मर्यादा पुरुषोत्तम थे।

अतिथि- महर्षि दयानन्द चित्र दीर्घा एवं वस्तु प्रदर्शनी देखने, विद्वानों-संन्यासियों से मिलने, यज्ञ-प्रवचन से लाभ लेने, भ्रमण तथा प्रचार हेतु ब्रह्मचारी, संन्यासी, वानप्रस्थी, विद्वान्, गृहस्थ स्त्री-पुरुष-बच्चे ऋषि उद्यान आते रहते हैं। पिछले पन्द्रह दिनों में नान्देड़, विजयनगर, मेड़ता सिटी, नोखा, उज्जैन, अलवर, सवाई माधोपुर, भीलवाड़ा, जयपुर, पीलीभीत, इन्दौर, हरिद्वार, चरखी दादरी, कुचेरा, देहरादून, पाली, आगरा, रुद्रपुर, ब्रह्मसर, भरतपुर, बीकानेर, कड़ैल, दिल्ली, झज्जर, ब्यावर, सिसोला आदि स्थानों से कुल ६५ अतिथि ऋषि उद्यान आये। जिनमें स्वामी राजानन्द सरस्वती, स्वामी नित्यानन्द जी, वेदमुनि जी वानप्रस्थी, स्वामी प्रशान्तानन्द जी प्रमुख हैं।

जन्मदिवस - ऋषि उद्यान की यज्ञशाला में कोटा निवासी श्री गणपतलाल तापड़िया जी ने २९ मई को विवाह वर्षगाँठ एवं २ जून को जन्मदिवस के उपलक्ष्य में यज्ञ किया। ३ जून को श्री अजमेर निवासी श्री दिनेश नवाल एवं उनकी पत्नी श्रीमती राजकुमारी नवाल जी ने अपने विवाह वर्षगाँठ पर यज्ञ किया । परोपकारिणी सभाकी ओर से सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में स्थिर-निधि

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने परोपकारिणी सभा की स्थापना करते समय तीन उद्देश्य रखे थे-

१. वेद और वेदांगादि शास्त्रों के प्रचार अर्थात् उनकी व्याख्या करने-कराने, पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने, छापने-छपवाने आदि में, २. वेदोक्त-धर्म के उपदेश और शिक्षा अर्थात् उपदेशक-मण्डली नियत करके देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में भेजकर सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग कराने आदि में ३. आर्यावर्तीय अनाथ और दीन मनुष्यों के संरक्षण, पोषण और सुशिक्षा में व्यय करें और करावें।

इन कार्यों को करने के लिये सभा का वर्तमान मासिक व्यय लगभग १२ लाख रुपये है, जो कि आर्यजनों के दान पर ही निर्भर है। परोपकारिणी सभा के कार्यकारिणी अधिवेशन सं. २२९ एवं साधारण अधिवेशन सं. १२० के प्रस्ताव १३ में आचार्य धर्मवीर जी द्वारा प्रारम्भ किये गये बृहत् प्रकल्पों (प्रकाशन, प्रचार, अध्यापन आदि) के लिये आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में एक करोड़ रुपये की स्थिर-निधि बनाने का संकल्प लिया गया है। आर्यजनों से निवेदन है कि इस पुनीत कार्य में अपना अधिक से अधिक सहयोग प्रदान कर आचार्य जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें।

आप अपना दान चैक, ड्राफ्ट या सभा के खाते में सीधे भी भेज सकते हैं। कृपया, राशि भेजने के पश्चात् सभा में दूरभाष या पत्र द्वारा अवश्य सूचित कर दें।

मन्त्री

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है, वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय-व्यवस्था से सुख देवे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें। **- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३**

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

आर्यजगत् के समाचार

१. वैदिक संस्कार शिविर आयोजित- आर्यसमाज हिरण मगरी उदयपुर द्वारा कन्याओं के लिए दिनांक २८ मई से ४ जून तक वैदिक संस्कार शिविर आचार्य वेदप्रिय शास्त्री के निर्देशन एवं सरला गुप्ता के संयोजन में संपन्न हुआ। समापन समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ, विशेष अतिथि डॉ. रेनू जटाना, अध्यक्षा श्रीमती शारदा गुप्ता एवं शिविर निदेशक आचार्य वेदप्रिय शास्त्री द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र एवं प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गए। समारोह संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने एवं सभी का धन्यवाद श्रीमती ललिता मेहरा ने किया।

२. सौप्रस्थानिक समारोह- गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल मेरठ में १० जून को नौ ब्रह्मचारियों का सौप्रस्थानिक समारोह आयोजित किया गया। आयोजन की अध्यक्षता गुरुकुल के कुलपति पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी ने की। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आर्यसमाज थापरनगर मेरठ के प्रधान श्री राजेश सेठी उपस्थित थे, गुरुकुल के मन्त्री आचार्य वाचस्पति जी ने भी समारोह में अपना वक्तव्य दिया। आर्ष गुरुकुल पौंधा देहरादून के आचार्य धनञ्जय भी उपस्थित रहे।

३. आर्यन अभिनन्दन समारोह- प्रत्येक वर्ष की भांति इस बार भी १७ सितम्बर २०१७ को दिल्ली में ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट द्वारा आर्यों का अभिनन्दन किया जा रहा है।

१. जो आर्य व्यक्तिगत रूप से प्रकाशन चला रहे हैं, पत्रिका निकाल रहे हैं, पुस्तक विक्रेता हैं।

२. आर्य समाज के प्रचार में एक ही परिवार से पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-बहन, भाई-भाई आदि वेद-प्रचार में लगे हैं।

३. जो पुरोहित एक ही आर्य समाज में २५ वर्ष या उससे ज्यादा समय से सेवा कर रहे हैं।

सम्पूर्ण विवरण लिखकर भेजने की कृपा करें। **सम्पर्क**- ०११-४५७९११५२, २९८४२५२७, ९५९९१०७२०७

४. प्रचार कार्यक्रम- आर्यसमाज भच्छी (दरभंगा) बिहार द्वारा १९ से २६ मई २०१७ तक ग्राम भच्छी, बहेड़ी (दरभंगा) व रैमा (साहरघाट) मधुबनी में प्रचार कार्यक्रम रखा गया। जिसमें होशंगाबाद के आचार्य आनन्द पुरुषार्थी व मेरठ के पण्डित अजय आर्य के उपदेश हुए।

चुनाव समाचार

५. आर्यसमाज भच्छी (दरभंगा) बिहार के चुनाव में **प्रधान**- डॉ. अमरेन्द्र कुमार, **मन्त्री**- श्री रामदेव यादव, **कोषाध्यक्ष**- श्री रमाकान्त यादव को चुना गया।

प्रो. धर्मवीर जी

श्रीपाल आर्योपदेशक

दिन को ना चैन जिसे रात में विश्राम था
प्रो. धर्मवीर दूजा पं. लेखराम था
प्रो. धर्मवीर को हर कोई जानता है
विद्वता का लोहा उनका विरोधी भी मानता है
दयानन्द का दिवाना वह, पीये वैदिक जाम था।। १।।

घर परिवार की चिन्ता सताई नहीं
दक्षिणा की पाई तक निज उपयोग में लगाई नहीं
तहरीर और तकरीर से इतर ना कोई काम था।। २।।

सभी उसके अपने थे कोई ना पराया था
ऋषिवर-कार्य बस एक सूत्र पाया था
अजमेर को बनाया उसने सच्चा तीर्थ धाम था।। ३।।

ऋषि उद्यान में जो पुष्प रंग लाये हैं
सबके सब ये बिरवे उसके हाथ के रोपाये हैं
निराई गुड़ाई करता स्वयं प्रातः शाम था।। ४।।

विधर्मी भी काँपते थे सचमुच धर्मवीर से
करता खिंचाई सबकी तर्क पूर्ण तहरीर से
लेखनी का जादूगर वह आर्यों का धाम था।। ५।।

रह-रह करके याद उनकी सभी को रुलावती
''श्रीपाल'' वैसी मूर्ति ना नजरों में आवती
दर्द को काफूर करे निराली वह बाम था।। ६।।